नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 149
दि. 03.03.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

संस्कृति, संगठन और राष्ट्रभक्ति का विराट संगम: सूरत में फागोत्सव 2026 ने रचा इतिहास

जीएनएस)। सूरत। गुजरात की धरती पर बसे मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक चेतना एक बार फिर पूरे वैभव के साथ उजागर हुई, जब राजस्थान युवा संघ द्वारा आयोजित फागोत्सव 2026 के दूसरे दिन परंपरा, लोककला, सामाजिक एकता और राष्ट्रभक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। हजारों समाजबंधुओं की गरिमामयी उपस्थिति और उत्साहपूर्ण सहभागिता ने यह प्रमाणित कर दिया कि फागोत्सव केवल एक वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज की आत्मा से जुड़ी एक जीवंत परंपरा है, जो वर्षों से गुजराती मारवाड़ी समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है।

कार्यक्रम में राजस्थान से पधारे विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा को और बढ़ा दिया। श्रवण सिंह बगड़ी (प्रदेश महामंत्री, भाजपा), मिथिलेश गौतम (प्रदेश महामंत्री, भाजपा) तथा शंकर गौरा (प्रदेश युवा अध्यक्ष, भाजपा) ने मंच से अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजन समाज को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं और नई पीढ़ी को संस्कारों से परिचित कराते हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृति ही समाज की पहचान है और जब समाज अपनी परंपराओं के साथ खड़ा होता है, तब राष्ट्रीय एकता की भावना और अधिक सशक्त होती है। अतिथियों ने राजस्थान युवा संघ की संगठन क्षमता, अनुशासन और सामाजिक प्रतिबद्धता की खुलकर सराहना की।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को भव्यता की नई ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। जयपुर से आए पणिहारी ग्रुप ने पारंपरिक राजस्थानी लोकनृत्यों की मनोहारी झलक प्रस्तुत की। घूमर की शालीनता, भवई में कलाकारों का अद्भुत संतुलन, तेराताली की लयात्मकता, मयूर नृत्य की आकर्षक भाव-भंगिमा और वीर हनुमाना की ओजस्वी प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भवई नृत्य के दौरान कलाकारों द्वारा सिर पर मटकों का संतुलन और ताल के साथ सधी हुई प्रस्तुति पर पांडाल तालियों की

गड़गड़ाहट से गूंज उठा। महिला शक्ति द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक घूमर ने राजस्थानी सौंदर्य, शालीनता और मर्यादा की अनुपम छवि पेश की।

कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि विभिन्न समाजों ने मिलकर सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया। माली समाज, घांची समाज, शिरवी समाज और सैनी समाज ने पारंपरिक गेर नृत्य की जोशपूर्ण प्रस्तुतियों से वातावरण को उत्सवधर्मी बना दिया। कुमावत समाज के पुरुष एवं महिला वर्ग ने भी गैर नृत्य में भाग लेकर सामाजिक समरसता का परिचय दिया। ढोल-नगाड़ों की गूंज, पारंपरिक वेशभूषा और युवाओं की ऊर्जावान भागीदारी ने पूरे मैदान को रंगों और उल्लास से भर दिया।

कार्यक्रम का एक अत्यंत भावनात्मक और प्रेरणादायी क्षण वह रहा जब देशभक्ति कविता के साथ उपस्थित जनसमूह ने तीन रंगों के गुब्बारे लहराकर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। पूरा पांडाल तिरंगे के रंगों में रंग गया और वातावरण में राष्ट्रभक्ति की भावना उमड़ पड़ी। मंच से गूंजे ओजस्वी शब्द — "आज़ादी के सदा अमर बलिदान को गाने आया हूँ" — जिन्हें वीरेंद्र राजावत ने अपने प्रभावशाली अंदाज़ में प्रस्तुत किया। उनके स्वर और भावों ने हजारों दर्शकों के रोंगटे खड़े कर दिए और पूरा परिसर देशभक्ति के नारों से गूंज उठा।

संघ अध्यक्ष विक्रम सिंह शेखावत ने अपने संबोधन में कहा कि फागोत्सव का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संस्कृति संरक्षण, सामाजिक एकता और युवा पीढ़ी को अपनी विरासत से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि जब समाज अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है, तब वह हर चुनौती का सामना करने में सक्षम होता है। संघ सचिव जगदीश शर्मा ने सभी अतिथियों, समाजबंधुओं और सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सामूहिक सहयोग और समर्पण के बिना इतना विशाल आयोजन संभव नहीं हो पाता।

कार्यक्रम के संयोजक राम अवतार पारीक और रमेश राठी ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सह-संयोजक बनवारी जाट और विनोद सारस्वत ने व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित रखते हुए कार्यक्रम को भव्य स्वरूप प्रदान किया। स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं की टीम ने अनुशासन, समन्वय और आतिथ्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी सराहना अतिथियों और उपस्थित जनसमूह ने खुले दिल से की।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान युवा संघ केवल सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित नहीं है। संघ समाजसेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। 'राजस्थान मानव सेवा संघ' के नाम से संचालित अस्पताल में प्रतिदिन सैकड़ों मरीजों का रियायती दरों पर उपचार किया जाता है। जरूरतमंदों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना संघ का प्रमुख उद्देश्य है। इस सामाजिक सेवा के कारण संघ को समाज के सभी वर्गों का विश्वास और समर्थन प्राप्त है।

हजारों की संख्या में उपस्थित समाजबंधुओं ने आयोजन की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए इसे संस्कृति, सेवा, संगठन शक्ति और राष्ट्रभक्ति का अनुपम उदाहरण बताया। फागोत्सव 2026 ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि जब समाज एकजुट होकर अपनी परंपराओं का उत्सव मनाता है, तो वह केवल कार्यक्रम नहीं रहता, बल्कि प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। सूरत की धरती पर सजा यह सांस्कृतिक महोत्सव आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्मरणीय अध्याय बन गया है, जो बताता है कि परंपरा जब उत्सव में बदलती है, तो समाज की पहचान और अधिक उज्ज्वल हो जाती है।

महिला सशक्तिकरण की नई दिशा: दिल्ली सरकार की चार ऐतिहासिक योजनाओं से बदलेगा राजधानी का सामाजिक परिदृश्य

जीएनएस)। महिला दिवस से ठीक पहले दिल्ली की राजनीति और सामाजिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण संदेश गूंजा—सशक्त नारी, समृद्ध दिल्ली। राजधानी में आयोजित भव्य समारोह में देश की राष्ट्रपति Droupadi Murmu ने महिलाओं के लिए चार प्रमुख योजनाओं का शुभारंभ किया, जिनका उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर महिलाओं को मजबूती देना है। इस अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री Rekha Gupta, उपराज्यपाल Vinai Kumar Saxena तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान किया।

राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी समाज की प्रगति का वास्तविक पैमाना उसकी महिलाओं की स्थिति से तय होता है। जब महिलाएं शिक्षित, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनती हैं, तब राष्ट्र भी सशक्त होता है। उन्होंने कहा कि खेल, विज्ञान, प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय महिलाएं तिरंगा लहरा रही हैं, लेकिन इसके साथ ही यह भी सच है कि समाज के कई हिस्सों में महिलाएं अभी भी हिंसा और भेदभाव का सामना कर रही हैं। ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी है कि वह ठोस नीतियों और योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान और अवसर प्रदान करे।

इस समारोह में जिन योजनाओं की घोषणा की गई, उनमें 40,642 बालिकाओं को लगभग 100 करोड़ रुपये की डायरेक्ट बैंक ट्रांसफर सहायता, 'सहेली पिंक स्मार्ट कार्ड' के माध्यम से महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा

की सुविधा, होली पर मुफ्त एलपीजी सिलेंडर के लिए लगभग 129 करोड़ रुपये की डीबीटी सहायता, तथा 'दिल्ली लखपति बिटिया योजना' का शुभारंभ शामिल है। इसके अतिरिक्त 'मेरी पूंजी, मेरा अधिकार' अभियान के तहत लाडली योजना में लंबे समय से रुकी हुई धनराशि भी जारी की गई।

राष्ट्रपति ने कहा कि ये योजनाएं केवल वित्तीय सहायता नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक सोच में परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री और उनकी टीम को बधाई देते हुए कहा कि इन पहलों से दिल्ली की महिलाएं आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को शिक्षित और स्वावलंबी बनाना केवल सरकार का नहीं, बल्कि पूरे समाज का कर्तव्य है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि आज का मंच विश्वास का मंच है—बेटी के जन्म से लेकर शिखर तक की यात्रा का मंच। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति का जीवन हर बेटी के लिए प्रेरणा है और यह संदेश देता है कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती। उन्होंने कहा कि सरकार की इन योजनाओं का मूल उद्देश्य महिलाओं की गरिमा को केंद्र में रखकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है।

मुख्यमंत्री ने 'लखपति बिटिया योजना' को दिल्ली की बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव बताया। उन्होंने कहा कि यह योजना केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी दीर्घकालिक सोच का हिस्सा है जो बेटियों को आत्मनिर्भर बनाएगी। उन्होंने प्रधानमंत्री Narendra Modi के उस संदेश का उल्लेख किया जिसमें कहा गया था कि यदि जनता का पैसा सरकार के पास रुका हुआ है, तो उसे खोजकर लाभार्थियों तक पहुंचाया जाना चाहिए। इसी सोच के तहत 'मेरी पूंजी, मेरा अधिकार' अभियान के अंतर्गत लाडली योजना की लंबित राशि को लाभार्थियों के खातों में स्थानांतरित किया गया।

सहेली पिंक स्मार्ट कार्ड को लेकर भी सरकार ने बड़ा दावा किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व में शुरू की गई पिंक टिकट व्यवस्था में भ्रष्टाचार की संभावनाएं थीं, इसलिए नई व्यवस्था के तहत स्मार्ट कार्ड लाया गया है। यह कार्ड न केवल बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा देगा, बल्कि टॉप-अप के बाद मेट्रो में भी उपयोग किया जा सकेगा। इससे महिलाओं को रोजमर्रा की आवाजाही में सुविधा मिलेगी और वे बिना अतिरिक्त आर्थिक बोझ के शिक्षा, रोजगार और अन्य कार्यों के लिए यात्रा कर सकेंगी।

होली और दिवाली जैसे त्योहारों पर मुफ्त एलपीजी सिलेंडर की घोषणा को भी महिलाओं के लिए राहतकारी कदम माना जा रहा है। रसोई गैस की बढ़ती कीमतों के बीच यह सहायता सीधे बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से भेजी जाएगी, जिससे पारदर्शिता बनी रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कदम केवल आर्थिक राहत नहीं, बल्कि रसोई में सुरक्षा और भरोसे की लौ जलाए रखने का प्रयास है।

दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने सरकार की इन पहलों की सराहना करते हुए कहा कि जब किसी योजना का शुभारंभ स्वयं देश की प्रथम नागरिक द्वारा किया जाता है, तो उसका महत्व और बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि सरकार की दूरदर्शी सोच ही प्रदेश को आगे बढ़ाने का कार्य करती है और पिछले एक वर्ष में महिलाओं के लिए कई योजनाएं लागू की गई हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित लाभार्थियों की खुशी देखते ही बन रही थी। कई महिलाओं ने बताया कि लाडली योजना की राशि लंबे समय से अटकी हुई थी और उन्हें उम्मीद भी नहीं थी कि वह कभी मिलेगी। लेकिन सरकार से फोन आने और आज राशि खाते में जमा होने के बाद उन्हें ऐसा लगा मानो कोई लॉटरी लग गई हो। कुछ महिलाओं ने मुफ्त सिलेंडर की सहायता को अपने परिवार के लिए बड़ी राहत बताया, जबकि पिंक स्मार्ट कार्ड को लेकर युवतियों और कामकाजी महिलाओं में विशेष उत्साह देखा गया।

मिडिल ईस्ट में युद्ध की आंच, भारतीयों की सुरक्षित वापसी के लिए भारत सरकार की तेज होती कोशिशें

जीएनएस)। मध्य पूर्व में तेजी से बिगड़ते हालात ने पूरी दुनिया की चिंता बढ़ा दी है और भारत भी इस संकट को लेकर लगातार सतर्क निगरानी बनाए हुए है। ईरान और इजराइल के बीच छिड़े सैन्य टकराव ने अब व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष का रूप ले लिया है, जिसमें अमेरिका की सक्रिय भागीदारी ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। खाड़ी क्षेत्र के कई देशों के हवाई क्षेत्र आंशिक या पूर्ण रूप से बंद कर दिए गए हैं, जिसके चलते सैकड़ों उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं और हजारों भारतीय नागरिक विभिन्न देशों में फंस गए हैं। भारत सरकार ने इस संकट की घड़ी में अपने नागरिकों को सुरक्षित वापस लाने के लिए प्रयास तेज कर दिए हैं और नागरिक विमानन मंत्रालय से लेकर विदेश मंत्रालय तक हर स्तर पर समन्वय किया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, बहरीन, सऊदी अरब और इजराइल की दिशा में मिसाइल हमले किए हैं, जबकि अमेरिका और इजराइल की ओर से भी ईरान के ठिकानों पर जवाबी बमबारी जारी है। इस संघर्ष का सीधा असर हवाई यातायात पर पड़ा है और आज निर्धारित 357 उड़ानों को रद्द करना पड़ा। कई अंतरराष्ट्रीय एयरलाइंस ने सुरक्षा कारणों से अपने मार्ग बदल दिए हैं या अस्थायी रूप से सेवाएं स्थगित कर दी हैं। नागरिक विमानन मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि वह स्थिति पर चौबीसों घंटे नजर रखे हुए है और यात्रियों को

राहत देने के लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। मंत्रालय ने यात्री सहायता कंट्रोल रूम स्थापित किया है, जहां शिकायतों की निगरानी की जा रही है। अब तक 559 यात्रियों की शिकायतों का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जा चुका है और आगे भी निरंतर कार्रवाई जारी है।

मध्य पूर्व के देशों में भारतीय समुदाय की संख्या बहुत बड़ी है। संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कतर, कुवैत और बहरीन जैसे देशों में लाखों भारतीय नौकरी, व्यवसाय और पेशेवर कार्यों में लगे हुए हैं। हर वर्ष बड़ी संख्या में भारतीय धार्मिक यात्राओं, विशेषकर उमराह और हज के लिए सऊदी अरब जाते हैं। पर्यटन और व्यापारिक कारणों से भी भारतीयों की आवाजाही निरंतर बनी रहती है। ऐसे में मौजूदा संघर्ष ने हजारों परिवारों की चिंता बढ़ा दी है। दुबई में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी PV Sindhu के फंसे होने की खबर ने भी स्थिति की गंभीरता को उजागर किया है। इसी प्रकार बॉलीवुड अभिनेत्री Sonal Chauhan, Esha Gupta और Nargis Fakhri समेत कई भारतीय नागरिक फिलहाल दुबई और अन्य खाड़ी देशों में फंसे हुए हैं।

भारत सरकार की प्राथमिकता अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। विदेश मंत्रालय ने संबंधित देशों के भारतीय दूतावासों और उच्चायोगों को सतर्क रहने के निर्देश दिए हैं। स्थानीय प्रशासन से समन्वय कर भारतीयों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने, आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने और वापसी की संभावनाओं पर काम किया जा रहा है। एयर इंडिया और अन्य भारतीय विमानन कंपनियों को भी निर्देश दिए गए हैं कि जैसे ही हवाई क्षेत्र खुलता है, वे विशेष उड़ानों की व्यवस्था करने के लिए तैयार रहें। जरूरत पड़ने पर विशेष बचाव अभियान भी चलाया जा सकता है, जैसा कि पहले भी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संकटों के दौरान किया गया है।

स्थिति की गंभीरता इस बात से भी समझी जा सकती है कि अमेरिकी राष्ट्रपति Donald Trump ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की तैयारी कई हफ्तों से चल रही थी और यदि आवश्यकता पड़ी तो यह अभियान लंबा चल सकता है। उनका दावा है कि लक्ष्य ईरान की मिसाइल क्षमता, नौसेना और परमाणु कार्यक्रम को निष्क्रिय करना है। उन्होंने ईरान के कई युद्धपोत नष्ट किए जाने की बात भी कही है। दूसरी ओर ईरान ने भी कड़े तेवर अपनाए हुए हैं और जवाबी हमलों को तेज कर दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह संघर्ष लंबा खिंचता है तो इसका प्रभाव वैश्विक तेल आपूर्ति, व्यापार मार्गों और अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा।

खाड़ी क्षेत्र विश्व के ऊर्जा आपूर्ति तंत्र का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां से निकलने वाला कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस एशिया, यूरोप और अमेरिका तक पहुंचता है। युद्ध की स्थिति में यदि समुद्री मार्ग बाधित होते हैं या तेल उत्पादन प्रभावित होता है तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में भारी उछाल आ सकता है। भारत, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इस स्थिति से अछूता नहीं रहेगा। इसलिए सरकार कूटनीतिक स्तर पर भी सक्रिय है और सभी पक्षों से संयम बरतने की अपील कर रही है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वैश्विक राजनीति में अस्थिरता का सीधा असर आम नागरिकों पर पड़ता है। हजारों भारतीय कामकाजी लोग, छात्र, पर्यटक और पेशेवर इस समय अनिश्चितता के दौर से गुजर रहे हैं। सोशल मीडिया पर परिजन लगातार अपील कर रहे हैं कि उनके प्रियजनों को सुरक्षित स्वदेश लाया जाए। सरकार ने आश्वासन दिया है कि किसी भी भारतीय को असहाय नहीं छोड़ा जाएगा और हर संभव प्रयास किया जाएगा।

युवा इंजीनियर शशिकांत सोलंकी का असामयिक निधन, 6 मार्च को ओराना मुकाम में अंतिम संस्कार

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत शहर ने एक युवा, होनहार और मिलनसार व्यक्तित्व को असमय खो दिया। सामाजिक और कर्मचारी संगठनों से जुड़े प्रतिष्ठित परिवार के सदस्य शशिकांत सोलंकी का 28 फरवरी 2026 को दुखद निधन हो गया। वे सूरत जिला हरिजन सेवा मंडल के उपाध्यक्ष तथा गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के उपाध्यक्ष अमृतभाई सोलंकी के पुत्र थे। उनके निधन की खबर से सामाजिक, कर्मचारी और वाल्मीकि समाज में शोक की लहर दौड़ गई। शशिकांत सोलंकी सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक थे और निर्माण क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत थे। कम उम्र में ही उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, दक्षता और प्रतिबद्धता की पहचान बना ली थी। परिवार और परिचितों के अनुसार वे सरल स्वभाव, सकारात्मक सोच और मददगार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे अपने पेशे के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में भी रुचि रखते थे और पिता के सामाजिक कार्यों से प्रेरणा लेते थे। बताया गया है कि वे 9 फरवरी 2026 से पीलिया से पीड़ित थे। प्रारंभिक उपचार के बाद उनकी तबीयत में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ और स्थिति गंभीर होती चली गई। परिवार ने सूरत के प्रमुख अस्पतालों में उनका उपचार कराया। उसी दौरान उनके पिता अमृतभाई सोलंकी का भी शहर के एक बड़े अस्पताल में इलाज चल रहा था। परिवार के लिए यह समय अत्यंत कठिन और भावनात्मक रूप से पीड़ादायक रहा। चिकित्सकों के प्रयासों के बावजूद शशिकांत सोलंकी को बचाया नहीं जा सका और 28 फरवरी को उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके निधन से न केवल परिवार बल्कि सामाजिक संगठनों और परिचितों में भी गहरा दुख व्याप्त है। शशिकांत सोलंकी अपने पीछे शोकाकुल माता-पिता, परिवारजन और मित्रों को छोड़ गए हैं। समाज के लोगों ने इसे एक बड़ी क्षति बताया है, क्योंकि वे युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में आगे बढ़ रहे थे और भविष्य में सामाजिक योगदान की संभावनाएं उनसे जुड़ी हुई थीं। उनका अंतिम संस्कार 6 मार्च 2026 को शाम 4 बजे सूरत स्थित ओराना मुकाम में किया जाएगा। अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में सामाजिक, राजनीतिक और कर्मचारी संगठनों से जुड़े लोग उपस्थित रहने की संभावना है। गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव, सूरत मेडिकल कॉलेज के निवारक एवं सामाजिक चिकित्सा विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. एस.एल. कंथारिया, गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज के कार्यकारी अध्यक्ष शशिकांत सोलंकी, उपाध्यक्ष सतीशभाई सोलंकी, अधिवक्ता अश्विन बी. वैष्णव, हितेशभाई वाघेला भाड़ा सहित अनेक सामाजिक नेताओं और गणमान्य व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति दें। शहर के सामाजिक संगठनों ने शोक संदेश जारी कर कहा कि शशिकांत सोलंकी का जाना एक उभरते हुए युवा की असमय विदाई है। उनके व्यक्तित्व में विनम्रता और कर्मठता का समन्वय था। वे अपने पेशे में उत्कृष्टता हासिल करने के साथ-साथ समाज सेवा की भावना भी रखते थे। सूरत के सामाजिक और कर्मचारी संगठनों में लंबे समय से सक्रिय अमृतभाई सोलंकी के परिवार पर आई इस विपत्ति ने सभी को भावुक कर दिया है। विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि इस कठिन घड़ी में पूरा समाज उनके साथ खड़ा है। शशिकांत सोलंकी की स्मृति में कई सामाजिक संगठनों द्वारा श्रद्धांजलि सभा आयोजित करने की भी योजना है, जिसमें उनके जीवन और योगदान को याद किया जाएगा। युवा आयु में ही जीवन यात्रा समाप्त हो जाने से उनके परिचितों के मन में गहरी पीड़ा है, लेकिन सभी का विश्वास है कि उनकी सरलता, परिश्रम और सकारात्मक सोच की यादें सदैव प्रेरणा देती रहेंगी। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और परिवार को इस असीम दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें—इसी प्रार्थना के साथ सूरत शहर ने अपने एक होनहार सपूत को भावभीनी विदाई दी।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा सीबीआई-ईडी को फटकार और उत्पाद शुल्क मामले के बाद उठे सवाल

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सीबीआई, ईडी, आईटी आदि जैसी जांच एजेंसियों की बार-बार की गई आलोचना इन संस्थानों के लिए सचमुच डूबते पानी जैसी स्थिति है। लेकिन पता नहीं क्यों ये शीर्ष एजेंसियां सुधार का नाम नहीं ले रही हैं। यह उनके प्रदर्शन में सुधार की बजाय उसे बिगाड़ने का एक और उदाहरण है। आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनके वरिष्ठ नेताओं को आबकारी मामले में जिस तरह बरी किया गया है, उसे देखकर जांच एजेंसियां संदेह के घेरे में आ गई हैं।

शून्य त्रुटि एजेंसी

इस मामले ने देश की राजनीति में हलचल मचा दी थी। इस मामले में आम आदमी पार्टी को भारी नुकसान हुआ और दिल्ली

में सत्ता भी गंवानी पड़ी। केजरीवाल, मनोज सिसोदिया जैसे वरिष्ठ नेताओं को जेल भी जाना पड़ा। इसके बाद स्वाभाविक रूप से सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कामकाज की कड़ी आलोचना हुई। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कामकाज और जांच पद्धति पर पहले भी सवाल उठ चुके हैं। इन एजेंसियों की छवि को लेकर भी चिंताएं जताई गई हैं। हालांकि, दिल्ली शराब नीति घोटाले में विशेष अदालत के फैसले ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या ये एजेंसियां जानबूझकर नेताओं और अन्य व्यक्तियों के खिलाफ मामले दर्ज कर रही हैं? और क्या इनका दुरुपयोग हो रहा है?

लेकिन हैरानी की बात यह है कि विपक्षी दलों और अदालतों द्वारा बार-बार सवाल उठाए जाने के बावजूद, ईडी और सीबीआई के कामकाज के तरीकों में कोई बदलाव नहीं आया है। ईडी द्वारा दर्ज किए गए सभी मामलों में दोषसिद्धि दर बहुत कम है और यह जानना जरूरी है कि ऐसा क्यों है। क्या यह चिंता का विषय नहीं होना चाहिए कि इन एजेंसियों की विश्वसनीयता पर केवल उनके काम करने के तरीके के कारण सवाल उठ रहे हैं? क्या किसी वास्तविक मामले में उनकी विश्वसनीयता दांव पर नहीं लगेगी? इस प्रकार, जनता को यह धारणा बन रही है कि जांच एजेंसियां किसी के आदेश पर काम करने वाली कठपुतली बन गई हैं।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

अर्थव्यवस्था व विदेश नीति होगी प्रभावित

'समरथ को नहिं दोष गुसाईं'—यह उक्ति उस कटु सत्य को उजागर करती है जिसमें शक्ति ही न्याय का निर्धारण करने लगती है। यदि वैश्विक राजनीति में भी यही सिद्धांत लागू होने लगे, तो अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता और नैतिकता का पूरा ढांचा केवल औपचारिकता बनकर रह जाएगा। हाल के घटनाक्रमों में ईरान पर अमेरिका और इज़राइल की कथित सैन्य कार्रवाई और उसमें सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामेनेई तथा उनके परिवार के सदस्यों की मृत्यु जैसी खबरों ने वैश्विक व्यवस्था को लेकर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। चाहे इन घटनाओं का अंतिम सत्य जो भी हो, लेकिन इस तरह की सैन्य कार्रवाइयों को कुछ पश्चिमी देशों द्वारा तार्किक ठहराने की प्रवृत्ति यह संकेत देती है कि विश्व व्यवस्था अब नैतिकता से अधिक शक्ति-संतुलन के आधार पर संचालित हो रही है। अंतरराष्ट्रीय कानून और संस्थाओं का उद्देश्य ही यह था कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया को एक नियम-आधारित प्रणाली में बांधा जाए, जहां किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता का उल्लंघन अस्वीकार्य माना जाए। संयुक्त राष्ट्र इसी सोच का प्रतीक था। लेकिन यदि शक्तिशाली राष्ट्र अपने रणनीतिक हितों के लिए किसी अन्य देश की राजनीतिक संरचना को नष्ट करने या उसके नेतृत्व को समाप्त करने जैसे कदम उठाते हैं, तो यह न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह पूरी वैश्विक व्यवस्था के लिए एक खतरनाक मिसाल भी बन जाता है। इससे छोटे और विकासशील देशों में यह संदेश जाता है कि उनकी संप्रभुता केवल तब तक सुरक्षित है, जब तक वह महाशक्तियों के हितों के अनुरूप है।

यह प्रवृत्ति अचानक उत्पन्न नहीं हुई है। पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक राजनीति में शक्ति-आधारित हस्तक्षेपों की संख्या बढ़ी है। वेनेजुएला में राजनीतिक संकट के दौरान अमेरिका की भूमिका, राष्ट्रपति निकोलेस मादुरो के खिलाफ कार्रवाई की खबरें, रूस द्वारा यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण और एशिया में ताइवान को लेकर बढ़ता तनाव—ये सभी घटनाएं इस बात का संकेत देती हैं कि दुनिया एक बार फिर शक्ति-संघर्ष के युग में प्रवेश कर रही है। इस दौर में अंतरराष्ट्रीय कानून की बजाय सैन्य और आर्थिक शक्ति अधिक निर्णायक बनती जा रही है। इस पूरी प्रक्रिया में अमेरिका की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका की विदेश नीति अधिक आक्रामक और एकतरफा होती दिखाई दी है। 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति ने वैश्विक सहयोग की अवधारणा को पीछे धकेल दिया है। व्यापारिक टैरिफ, आर्थिक प्रतिबंध और सैन्य हस्तक्षेप—इन सभी माध्यमों से अमेरिका ने अपने हितों की रक्षा के लिए कठोर रुख अपनाया है। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुई हैं, ऊर्जा की कीमतों में अस्थिरता आई है और विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई है। ईरान पर हमले का सबसे बड़ा प्रभाव ऊर्जा सुरक्षा पर पड़ सकता है। दुनिया के लगभग एक-तिहाई तेल का परिवहन होर्मुज जलडमरूमध्य से होता है। इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार का सैन्य तनाव वैश्विक तेल बाजार को अस्थिर कर सकता है। यदि इस मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है, तो तेल की कीमतों में भारी वृद्धि हो सकती है, जिसका सीधा असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। इसके साथ ही लाल सागर क्षेत्र में भी अस्थिरता से ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। इस पूरे घटनाक्रम का भारत पर विशेष प्रभाव पड़ने की संभावना है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है, जिसमें मध्यपूर्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि ईरान और अमेरिका के बीच संघर्ष बढ़ता है, तो भारत की ऊर्जा सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। इससे पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि होगी, जिससे महंगाई बढ़ेगी और आम नागरिकों पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त मध्यपूर्व में लगभग 90 लाख भारतीय काम करते हैं। इस क्षेत्र में अस्थिरता उनके रोजगार और सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती है, जिससे भारत को मिलने वाली विदेशी मुद्रा पर भी असर पड़ेगा। भारत की विदेश नीति के सामने भी एक कठिन चुनौती उत्पन्न हो गई है। एक ओर भारत के अमेरिका और इज़राइल के साथ मजबूत रणनीतिक और आर्थिक संबंध हैं, वहीं दूसरी ओर ईरान के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध भी महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने संतुलित विदेश नीति अपनाने का प्रयास किया है, जिसमें सभी प्रमुख शक्तियों के साथ सहयोग बनाए रखा गया है। लेकिन इस प्रकार के संघर्ष भारत को किसी एक पक्ष के समर्थन या विरोध की स्थिति में धकेल सकते हैं, जो उसकी रणनीतिक स्वायत्तता के लिए चुनौतीपूर्ण होगा। इसके अतिरिक्त भारत इस समय वैश्विक दक्षिण के नेतृत्व का दावा कर रहा है और ब्रिक्स जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है, जिसमें ईरान भी शामिल हो चुका है। ऐसे में भारत के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सिद्धांतों का समर्थन करे, साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा भी सुनिश्चित करे।

सहज जीवन से ही सुकून-शांति की प्राप्ति

> "सरलता का जीवन, वह धरा है, जहां संवेदनाओं की फसल निरंतर लहलहाती रहती है। सही मायनों में सहजता ही वह उर्वर शक्ति है, जो हमारे व्यक्तित्व को 'बंजर' होने से बचाने में सक्षम है।

यह समय की विसंगति ही कही जाएगी कि आर्थिक तरक्की और समृद्धि के बावजूद हमारे व्यवहार में कृत्रिमता का गहरा दखल हो गया है। किसी नजदीकी व्यक्ति से बातचीत करते हुए दिमाग में जोर डालना पड़ता है कि इस व्यक्ति की बात का वास्तविक अर्थ क्या है। यह भी कि अपने हितों की पूर्ति के लिए उसके व्यवहार में बदलाव क्यों व कैसे आ जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम देश-काल-परिस्थिति और अपनी जरूरतों के मुताबिक व्यवहार बदलते रहते हैं। व्यक्तित्व की जटिलता को विशिष्टता मानने का भ्रम मानवीय व्यवहार की विसंगति बनती जा रही है, जिसके लिये हम तमाम तरह के आडंबर व प्रपंच करते नजर आते हैं। हम आध्यात्मिक व धार्मिक होने का प्रदर्शन तो करते हैं लेकिन सही मायनों में हमारे कार्य व्यवहार में वो नजर नहीं आता है। आखिर व्यक्ति को अपने सामाजिक दायरे में ये गिरगिटी रंग क्यों बदलने पड़ते हैं? आखिर व्यक्ति क्यों स्वाभाविक जीवन नहीं जी पाता?

समय की विडंबना है कि सच बोलने से पहले व्यक्ति दस बार उसके नफे-नुकसान का आकलन करता है। यहां तक कि आत्मीय संबंधों में भी 'सहज संवाद' के बजाय व्यक्ति नफे-नुकसान का गणित देखता रहता है। सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हानि-लाभ का गणित तलाशना हमारी आदत बन जाती है। ऐसा लगता है, जैसे जीवन सामाजिक व्यवहार के बजाय मुनाफे की दुकान बनकर रह गई हो। हम भूल जाते हैं कि सामाजिक व्यवहार कोई गणित का सवाल नहीं है, जिसे नफे-नुकसान

के तराजू में तौला जा सके। दिखावे की इस दुनिया और आडंबरपूर्ण जीवन के बीच, कवि पं. भवानी प्रसाद मिश्र हमें चेताते हुए कहते हैं—

'तुम बंजर हो जाओगे/ यदि इतने व्यवस्थित ढंग से रहोगे/ यदि इतने सोच समझकर बोलोगे/ चलोगे/ कभी मन की नहीं कहोगे/ सच को दबाकर झूठे प्रेम के गाने गाओगे/ तो मैं तुम से कहता हूं,/ तुम बंजर हो जाओगे!'

सही मायनों में यहां बंजर होने से कवि का तात्पर्य मनुष्य द्वारा अपनी 'सहजता' को खो देना है। यह उस आंतरिक शून्यता की ओर उन्मुख होने का संकेत है, जहां मनुष्य के भीतर से प्रेम, करुणा और संवेदनाओं का स्रोत सूख जाता है। कवि की ये पंक्तियां नफे-नुकसान के सम्मोहन को त्यागने की बात करती है। कवि जिस बंजरपन से बचने की बात करता है, उसका समाधान केवल और केवल 'जीवन की सहजता' में निहित है। प्रश्न उठता है कि यह जीवन की सहजता आख़िर है क्या? क्या यह सरल होना मात्र है या कुछ और? दरअसल, सहजता का अर्थ है, मनुष्य का मूल व्यवहार। वह जो मनुष्य मूल प्रकृति है, जो हमारी कृत्रिमता, प्रदर्शन की इच्छा या 'लोग क्या कहेंगे' के भय से मुक्त है। सहज व्यक्तित्व में कोई जटिलता नहीं होती और अंदर कोई दोहरा व्यक्तित्व भी नहीं पलता। सहज व्यक्ति अपनी कमियों और खूबियों के साथ को स्वीकार करता है। हां, सहजता का अर्थ प्रमाद, अनुशासनहीनता या अनियंत्रित होना बिल्कुल नहीं है।

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार अपने मूल स्वभाव को छोड़कर किसी दूसरे के छद्म व्यवहार का अनुसरण सर्वथा त्याज्य है। यहां 'स्वधर्म' का अभिप्राय किसी कर्मकांड से नहीं, अपितु हमारी उस 'मौलिक प्रकृति' से है, जिसके साथ हमारा अस्तित्व स्पंदित होता है। यदि मनुष्य अपनी मौलिकता के व्यवहार में जीवन जीता है तो वह स्वस्थ जीवन भी जी सकता है।

निर्विवाद रूप से हमारे जीवन का वास्तविक सौन्दर्य सहजता में ही निहित है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर हम सहज क्यों नहीं रह पाते? दरअसल, इस असहजता की जड़ें हमारे उस मनोविज्ञान में निहित हैं, जहां हम स्वयं की एक आदर्श छवि गढ़ने की कोशिश में रहते हैं। हम स्वयं को अत्याधिक बुद्धिमान, संस्कारवान या फिर सफल दिखाने के सम्मोहन में बंध जाते हैं। फिर इसी गढ़ी हुई छवि को बनाए रखने का निरंतर दबाव हमें भीतर ही भीतर कमजोर बना देता है। हमें निरंतर यह भय सताने लगता है कि यदि हम अपने मौलिक स्वरूप में दिखे तो समाज हमें कमजोर या सामान्य न समझ ले ।

दरअसल, सहजता के मार्ग में दूसरी बड़ी चुनौती व्यक्तित्वों की 'तुलना' है। सही मायनों में हम दूसरों से स्वयं की तुलना करके हम अपने जीवन की स्वाभाविक लय को खो देते हैं। इसके अतिरिक्त कई बार माता-पिता द्वारा बच्चों की दोषपूर्ण परवरिश भी उसकी मौलिक प्रकृति को प्रभावित करती है, जो उसक सहज जीवन जीने में बाधा उत्पन्न करती है।

सहजता की ओर लौटने में 'स्वयं की स्वीकार्यता' ही सबसे महत्वपूर्ण सोपान है। हमें स्वयं को उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जैसे हम वास्तव में हैं। जब हम अपनी वास्तविकता को स्वीकार कर लेते हैं तो हम दूसरों के सामने बेझिझक अपनी मौलिकता और सहजता के साथ खड़े नजर आ सकते हैं। दूसरे, सहज रहने के लिए यह भी अनिवार्य है कि हमारी कथनी और करनी में कोई अंतर न हो। हमारे शास्त्र भी कहते हैं—'यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया'। अर्थात् जैसा हमारा चित्त हो, वैसी ही हमारी वाणी हो और जैसी हमारी वाणी हो, वैसा ही हमारा आचरण हो।

प्रकृति का एक शाश्वत नियम है—'जो वास्तविक है, वही सुंदर है।' इसलिए स्वयं को दिखावे से मुक्त रखें। अपनी एक कृत्रिम छवि गढ़ने के लिए अपनी ऊर्जा को व्यर्थ न गवांयें । सहज जीवन वह भूमि है जहां संवेदनाओं की हरियाली सदैव लहलहाती रहती है। वास्तव में, सहजता ही वह उर्वर शक्ति है जो हमारे व्यक्तित्व को 'बंजर' होने से बचाती है।

प्रेरणा

सुमति का प्रकाश ही जीवन की वास्तविक समृद्धि

एक बार एक जिज्ञासु व्यक्ति ने महान संत और कवि गोस्वामी तुलसीदास से विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया, "महाराज, सम्पूर्ण रामायण का सार क्या है? क्या कोई ऐसी चौपाई है, जिसमें इस महान ग्रंथ का पूरा संदेश समाहित हो?" तुलसीदासजी मुस्कुराए और शांत स्वर में उत्तर दिया—"हां, है। वह चौपाई है—जहां सुमति तह सम्पत्ति नाना, जहां कुमति विपत्ति जाना।" इस एक पंक्ति में जीवन का शाश्वत सत्य छिपा है। इसका अर्थ है कि जहां सद्बुद्धि, सच्ची सोच और धर्मपूर्ण विचार होते हैं, वहां हर प्रकार की समृद्धि, सुख और शांति अपने आप आ जाती है। इसके विपरीत जहां कुविचार, अहंकार और अधर्म का वास होता है, वहां विपत्तियां, दुःख और विनाश निश्चित रूप से आते हैं।

सुमति केवल बुद्धि का गुण नहीं है, बल्कि यह मन, आत्मा और संस्कारों की शुद्धता का प्रतीक है। सुमति वह प्रकाश है, जो व्यक्ति को सही मार्ग दिखाता है, जो उसे लोभ, मोह, क्रोध और अहंकार से दूर रखता है। सुमति वह शक्ति है, जो व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देती है। यही कारण है कि जहां सुमति होती है, वहां संघर्ष भी व्यक्ति को तोड़ नहीं पाता, बल्कि उसे और मजबूत बना देता है।

इस सत्य का सबसे सुंदर उदाहरण अयोध्या में देखने को मिलता है। अयोध्या केवल एक नगर नहीं था, बल्कि वह सुमति, प्रेम और आदर्शों का केंद्र था। वहां भाई-भाई में असीम प्रेम था। भगवान राम और उनके भाइयों के बीच जो त्याग और स्नेह था, वह मानव इतिहास में अद्वितीय है। पिता और पुत्र के संबंध में सम्मान और समर्पण था। राजा और प्रजा के बीच विश्वास और करुणा थी। सास और बहू के बीच मर्यादा और स्नेह था। सेवक और स्वामी के बीच निष्ठा और कर्तव्य की भावना थी। यही सुमति थी, जिसने अयोध्या को केवल एक समृद्ध नगर नहीं, बल्कि आदर्श समाज बना दिया था।

जब परिस्थितियों ने अयोध्या को संकट में डाल दिया, जब भगवान राम को वनवास जाना पड़ा, जब पूरा नगर शोक में डूब गया, तब भी वहां की सुमति समाप्त नहीं हुई। लोगों के हृदय में धर्म और सत्य के प्रति आस्था बनी रही। यही कारण है कि कठिन समय बीतने के बाद अयोध्या फिर से समृद्ध और खुशहाल बन गई। यह सुमति की ही शक्ति थी, जिसने अयोध्या को पुनः गौरव प्रदान किया।

इसके विपरीत लंका का उदाहरण कुमति के परिणाम को स्पष्ट करता है। लंका सोने की नगरी थी। वहां धन, वैभव और शक्ति की कोई कमी नहीं थी। लेकिन वहां के राजा और समाज में सुमति का अभाव था। अहंकार, अन्याय और अधर्म ने वहां अपना स्थान बना लिया था। एक भाई ने दूसरे भाई का अपमान किया और उसे राज्य से निकाल दिया। सत्य और धर्म की आवाज को दबा दिया गया। परिणाम यह हुआ कि इतनी समृद्ध और शक्तिशाली लंका भी विनाश से बच नहीं सकी। उसका वैभव राख में बदल गया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि केवल धन और शक्ति ही समृद्धि नहीं हैं। यदि सुमति नहीं है, तो सबसे बड़ी संपत्ति भी क्षणभर में समाप्त हो सकती है।

इसी प्रकार महाभारत का इतिहास भी सुमति और कुमति के परिणामों का जीवंत उदाहरण है। पाण्डव पांच भाई थे, जिनके पास प्रारंभ में कोई राज्य, कोई वैभव और कोई शक्ति नहीं थी। उन्हें अन्याय सहना पड़ा, वनवास झेलना पड़ा, अपमान सहना पड़ा। लेकिन उनके पास सुमति थी। वे धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर अडिग रहे। उन्होंने कभी अधर्म का साथ नहीं दिया, चाहे परिस्थितियां कितनी ही कठिन क्यों न रही हों। उनकी सुमति ने उन्हें धैर्य और विश्वास दिया।

इसके विपरीत कौरव के पास सब कुछ था—राज्य, सेना, धन और शक्ति। लेकिन उनके पास सुमति नहीं थी। उनके मन में अहंकार, ईर्ष्या और अन्याय की भावना थी। उन्होंने अधर्म का मार्ग चुना और सत्य को अनदेखा किया। परिणाम यह हुआ कि अंततः उन्हें विनाश का सामना करना पड़ा। महाभारत के युद्ध में उनकी पराजय हुई और उनका पूरा वंश समाप्त हो गया, जबकि पाण्डवों ने अंततः हस्तिनापुर पर शासन किया। यह सुमति की विजय और कुमति की पराजय का स्पष्ट प्रमाण है।

यह सिद्धांत केवल प्राचीन कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि आज भी उतना ही सत्य है। किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र की समृद्धि केवल धन और संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी सोच, उसके संस्कार और उसकी सुमति पर निर्भर करती है। जहां लोगों में परस्पर प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना होती है, वहां विकास और समृद्धि स्वाभाविक रूप से आती है। जहां लोग सत्य, न्याय और नैतिकता का पालन करते हैं, वहां स्थायी सुख और शांति का वास होता है।

इसके विपरीत जहां लोगों के मन में स्वार्थ, ईर्ष्या और अहंकार होता है, वहां चाहे कितनी भी भौतिक संपत्ति क्यों न हो, वहां स्थायी सुख नहीं रह सकता। कुमति व्यक्ति को गलत निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है, जिससे अंततः उसे और उसके आसपास के लोगों को दुःख और कष्ट का सामना करना पड़ता है।

सुमति का अर्थ केवल बुद्धिमत्ता नहीं है, बल्कि यह विवेक, करुणा, धैर्य और धर्म का संगम है। सुमति व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर समझने की क्षमता देती है। यह उसे कठिन परिस्थितियों में भी सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। सुमति व्यक्ति को विनम्र बनाती है, जबकि कुमति उसे अहंकारी बना देती है। सुमति व्यक्ति को जोड़ती है, जबकि कुमति उसे दूसरों से अलग कर देती है।

जीवन में सच्ची समृद्धि पाने के लिए आवश्यक है कि हम सुमति को अपनाएं। हमें अपने विचारों को शुद्ध रखना चाहिए, अपने कर्मों को धर्म और सत्य के अनुरूप रखना चाहिए, और अपने व्यवहार में प्रेम और करुणा को स्थान देना चाहिए। क्योंकि सुमति ही वह बीज है, जिससे समृद्धि का वृक्ष उत्पन्न होता है। यदि बीज शुद्ध होगा, तो वृक्ष भी स्वस्थ और फलदायी होगा।

अंततः यह सत्य अटल है कि सुमति ही समृद्धि का मूल आधार है। जहां सुमति होती है, वहां विपत्तियां भी व्यक्ति को पराजित नहीं कर पातीं। और जहां कुमति होती है, वहां समृद्धि भी स्थायी नहीं रह सकती। इसलिए यदि हम अपने जीवन में सुख, शांति और समृद्धि चाहते हैं, तो हमें सबसे पहले अपनी सुमति को जागृत करना होगा। यही जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है और यही सच्ची सफलता का मार्ग है।

मुकदमों का बोझ बढ़ाती सरकार, प्रशासनिक तंत्र की जवाबदेही तय कर हो सकता है निदान

भारत की न्याय व्यवस्था आज केवल लंबित मुकदमों की समस्या तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह न्याय-क्षमता और शासन-क्षमता के बीच बढ़ते असंतुलन की एक बड़ी कहानी बन गई है। दिसंबर 2025 तक के आंकड़े दर्शाते हैं कि पिछले पांच वर्षों में जिला एवं अधीनस्थ अदालतों में लंबित मामलों की संख्या लगभग 4.11 करोड़ से बढ़कर 4.80 करोड़ हो गई है।

इसी अवधि में उच्च न्यायालयों में लंबित मामले 53.1 लाख से बढ़कर 63.3 लाख और सर्वोच्च न्यायालय में यह संख्या 70 हजार से बढ़कर लगभग 90.7 हजार तक पहुंच गई है। वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में औसतन प्रति वर्ष 193 कार्य दिवस हैं, जबकि उच्च न्यायालयों में 215 और ट्रायल कोर्ट (अधीनस्थ न्यायालयों) में 245 दिन काम होता है। भारत उन देशों में शुमार है जहां की न्यायपालिका साल में सर्वाधिक दिन कार्य करती है। अमेरिका में यह अवधि मात्र 79 दिन है, जबकि आस्ट्रेलिया, कनाडा, सिंगापुर और ब्रिटेन की शीर्ष अदालतें क्रमशः 97, 120, 145 और 189 दिन ही बैठती हैं। भारत का सर्वोच्च न्यायालय प्रतिदिन औसतन 10 से 15 फैसले सुनाता है, जबकि इसके विपरीत अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट पूरे एक वर्ष में अधिकतम 10 से 15 निर्णय ही देता है। आम जनता में अक्सर न्यायालयों की छुट्टियों को लेकर बहस छिड़ी रहती है, परंतु सच तो यह है कि जो लोग इस व्यवस्था की आंतरिक कार्यप्रणाली से अनभिज्ञ हैं, वही इसकी आलोचना करते हैं। वास्तव में इन्हीं छुट्टियों के दौरान न्यायाधीश अपने आरक्षित निर्णयों और लंबित आदेशों को पूर्ण करते हैं। अवकाश के समय भी न्यायाधीश अपने चैंबर या घर पर स्थित कार्यालयों में बैठकर निरंतर जजमेंट लिखवाते हैं।

किसी भी निर्णय को अंतिम रूप देने से पहले उन्हें केस की विस्तृत फाइलों, लंबी जिरह के विवरणों और मामले से संबंधित पुराने कानूनी दृष्टांतों का गहन अध्ययन करना होता है। यह देश के सबसे कठिन कार्यों में से एक है, क्योंकि न्यायाधीश द्वारा लिखा गया प्रत्येक शब्द सीधे तौर पर लोगों के जीवन और उनके भविष्य को प्रभावित करता है। अत्यंत मानसिक दबाव और तनाव के प्रबंधन के लिए न्यायाधीशों को उचित विश्राम की आवश्यकता होती है।

यह धारणा भी गलत है कि न्यायाधीश केवल प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक ही कार्य करते हैं। वे अपना अधिकांश समय शाम, रात और सप्ताहांत में फाइलें पढ़ने, आदेश तैयार करने और कानूनी शोध करने में व्यतीत करते हैं, क्योंकि अदालत की कार्यवाही के दौरान उनके पास इन कार्यों के लिए बहुत कम समय बचता है। रिक्तियां तो एक बड़ी समस्या हैं ही, परंतु मुद्दा केवल पदों के खाली होने तक सीमित नहीं है। वास्तव में जब शासन-प्रशासन की नाकामियां रोजमर्रा के स्तर पर निर्णय लेने में अक्षम साबित होती हैं, तब नागरिक के पास न्याय और शिकायत के लिए एकमात्र भरोसेमंद विकल्प अदालत ही बचता है। यही देश में मुकदमों की बाढ़ की असली जड़ है। जब सरकारी फाइलें अटकती हैं, आदेश समय पर पारित नहीं होते और नियमों की व्याख्या हर दफ्तर में अलग-अलग की जाती है तो जवाबदेही से बचने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

इसका परिणाम यह है कि आज सड़क, पानी, भर्ती, जमीन और स्कूल-फीस जैसे बुनियादी मुद्दे भी अदालत की चौखट तक पहुंच रहे हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी विभाग स्वयं भी बड़े पैमाने पर अपील, रिविजन और रिट याचिकाओं में जाते हैं। ऐसे में न्यायालयों का बहुमूल्य समय न केवल विवाद निपटाने में, शासन के नियमों की निगरानी करने में भी व्यय होता है। अंततः अदालतें प्रशासनिक तंत्र की कमियों का बैकअप सिस्टम बनकर रह गई हैं, जिससे लंबित मामले बढ़ते हैं और सामान्य नागरिक के लिए न्याय की प्रक्रिया महंगी हो जाती है।

प्रतिदिन आने वाले नए मामलों की बाढ़ अदालतों का सुनवाई-समय निगल जाती है। ऐसे में वर्षों पुराने मुकदमे अगली तारीखों पर धकेल दिए जाते हैं। ऊपर से गवाहों की अनुपस्थिति, समन-तामीली में देरी, पुलिस चार्जशीट में विलंब और दस्तावेजी रिकॉर्ड की सुस्त प्रक्रिया एक केस को वर्षों तक खींचती है।

प्रश्न यह है कि क्या हम न्यायपालिका का बोझ केवल अदालतों के भीतर कम करेंगे या अदालतों के बाहर भी ठोस कदम उठाएंगे? असली राहत अदालत के बाहर मिलनी चाहिए, जहां नागरिक को समयबद्ध, तर्कसंगत और अपील-योग्य प्रशासनिक निर्णय प्राप्त हो सकें। केवल जटिल और गंभीर विवाद ही अदालत की दहलीज तक पहुंचने चाहिए। भारत में न्यायाधीश-जनसंख्या अनुपात के भारी अंतर को भी पाटना अनिवार्य है।

वर्ष 2020 के आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रति 10 लाख की आबादी पर मात्र 21 न्यायाधीश थे, जबकि 1987 में ही विधि आयोग ने प्रति 10 लाख नागरिकों पर कम से कम 50 न्यायाधीश होने का सुझाव दिया था। अमेरिका में प्रति 10 लाख लोगों पर 107 न्यायाधीश हैं और ब्रिटेन में यह संख्या 51 है। सरकारों को अपनी मुकदमेबाजी नीति में आमूल-चूल बदलाव करना चाहिए। वर्तमान स्थिति न केवल न्यायालयों का बहुमूल्य समय नष्ट कर रही है, बल्कि निरर्थक मुकदमों पर सार्वजनिक धन की भी भारी बर्बादी हो रही है। प्रशासनिक जवाबदेही तय करना और न्यायिक नियुक्तियों में तेजी लाना ही इस संकट का एकमात्र स्थायी समाधान है।

अभियान

रंगों में रचा-बसा भारतीय जीवन और समरसता का संदेश

फाल्गुन की पूर्णिमा का चांद जैसे ही आकाश में अपनी शीतल आभा बिखेरता है, वैसे ही धरती पर उल्लास की लहर दौड़ जाती है। होली का नाम लेते ही मन में रंगों की छटा, ढोलक की थाप, फाग के गीत और अपनत्व से भरे आलिंगन की स्मृतियां जाग उठती हैं। यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का जीवंत प्रतीक है। इसमें उमंग है, उत्साह है, ऊर्जा है और सबसे बढ़कर समभाव का रंग है। ठंड के लंबे मौसम के बाद जब प्रकृति स्वयं रंगों से सज जाती है, तब मनुष्य भी उसी लय में रंगों के माध्यम से अपने मन की प्रसन्नता प्रकट करता है। खेतों में झूमती सरसों की पीली आभा, गेहूं की सुनहरी बालियां और चने के हरे होले जैसे प्रकृति का आमंत्रण देते हैं कि आओ, जीवन को रंगों से भर दें।

भारत के विविध प्रांतों में यह उत्सव अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है, किंतु उसकी आत्मा एक ही है—स्नेह और समरसता। उत्तर भारत में इसे होली, फगुआ, धुलेंडी या फाग के नाम से जाना जाता है। कहीं रंगों की बौछार है, कहीं अबीर-गुलाल की कोमल छटा, तो कहीं लोकगीतों की मधुर ध्वनि। ब्रजभूमि की होली तो विश्वभर में विख्यात है। बरसाना और वृंदावन में खेली जाने वाली लठमार होली में हास्य, प्रेम और भक्ति का अद्भुत संगम दिखाई देता है। यहां श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं की स्मृति में रंगोत्सव मनाया जाता है। किंतु यह केवल खेल नहीं, बल्कि मर्यादा और प्रेम की अभिव्यक्ति है। कृष्ण का संदेश स्पष्ट है—प्रेम में भेदभाव नहीं होता, रंग सभी को समान रूप से स्पर्श करते हैं।

पूर्वी भारत में डोल जात्रा के रूप में यह उत्सव राधा-कृष्ण की झांकियों और कीर्तन के साथ मनाया जाता है। दक्षिण भारत में इसे कामदहनम कहा जाता है, जहां भगवान शिव द्वारा कामदेव के दहन की कथा स्मरण की जाती है। यह कथा आत्मसंयम और इंद्रियनिग्रह का संदेश देती है। पश्चिम भारत में रंग पंचमी का उल्लास कई दिनों तक बना रहता है। इस प्रकार भारत की सांस्कृतिक विविधता इस एक पर्व में एक सूत्र में बंधी दिखाई देती है।

होली का संबंध केवल रंगों से नहीं, बल्कि आस्था और नैतिकता से भी है। पौराणिक कथाओं में इसे भक्त प्रह्लाद की अटूट भक्ति और असत्य पर सत्य की विजय से जोड़ा जाता है। प्रह्लाद का धैर्य और विश्वास यह सिखाता है कि जब मन में श्रद्धा दृढ़ हो, तो विपत्तियां भी परास्त हो जाती हैं। होलिका का दहन केवल एक ऐतिहासिक प्रसंग नहीं, बल्कि अहंकार और अन्याय के अंत

का प्रतीक है। यह हमें स्मरण कराता है कि अधर्म चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः उसका विनाश निश्चित है।

होली का वैज्ञानिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऋतु परिवर्तन के इस समय में वातावरण में संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। परंपरागत होलिका दहन में गोबर के उपले, सूखी लकड़ियां और औषधीय सामग्री का उपयोग किया जाता था, जिससे वातावरण की शुद्धि होती थी। प्राकृतिक रंग—जैसे पलाश के फूल, हल्दी, नीम और चंदन—त्वचा के लिए लाभकारी होते थे। ये रंग शरीर को रोगों से बचाने में सहायक होते थे और त्वचा के छिद्रों को स्वच्छ करते थे। आज के रासायनिक रंगों के दुष्प्रभावों को देखते हुए हमें पुनः प्रकृति की ओर लौटने की आवश्यकता है।

होली का सामाजिक महत्व और भी व्यापक है। यह पर्व सामाजिक भेदभाव की दीवारों को तोड़ने का अवसर देता है। रंगों की एक परत जब चेहरे पर चढ़ जाती है, तो जाति, वर्ग, आयु और पद का अंतर मिट जाता है। सभी एक-दूसरे को गले लगाते हैं, पुरानी शिकायतें भूलते हैं और नई शुरुआत का संकल्प लेते हैं। यह समभाव का जीवंत उदाहरण है। भारतीय संस्कृति में समरसता और सामूहिकता को सदैव महत्व दिया गया है, और होली इसी परंपरा की सशक्त अभिव्यक्ति है।

ग्रामीण अंचलों में होली का उत्साह विशेष रूप से देखने योग्य होता है। खेतों की मेड़ों पर फाग गूंजते हैं, ढोलक की थाप पर लोकगीत गाए जाते हैं और महिलाएं मंगलगान करती हैं। हरियाणा में दुलंडी की परंपरा है, जहां होलिका दहन के पश्चात गेहूं और चने के भुट्टों को भूनकर 'होला' के रूप में ग्रहण किया जाता है। बच्चों के लिए मेवों और बेर की कंडी बनाई जाती है। यह केवल भोजन नहीं, बल्कि सामूहिक आनंद का प्रतीक है।

आधुनिक जीवन की व्यस्तता और तनाव के बीच होली हमें रुककर जीवन का आनंद लेने की प्रेरणा देती है। यह हमें याद दिलाती है कि जीवन केवल काम और प्रतिस्पर्धा का नाम नहीं, बल्कि रिश्तों की ऊष्मा और स्नेह का भी नाम है। जब हम किसी को रंग लगाते हैं, तो उसके साथ अपने मन की दूरी भी मिटाते हैं। क्षमा और प्रेम का भाव हमारे भीतर जागृत होता है। यही इस पर्व का वास्तविक संदेश है।

होली का आध्यात्मिक आयाम भी गहरा है। रंगों का यह खेल हमें बताता है कि जीवन में विविधता ही सौंदर्य है। जैसे इंद्रधनुष के सात रंग मिलकर आकाश को सुंदर बनाते हैं, वैसे ही समाज के विविध वर्ग मिलकर राष्ट्र की शक्ति बनते हैं। यदि हम केवल एक रंग को महत्व दें और अन्य को नकार दें, तो सौंदर्य अधूरा रह जाएगा। इसलिए होली हमें स्वीकार्यता और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाती है।

समकालीन समय में आवश्यक है कि हम इस पर्व की गरिमा को बनाए रखें। उच्छृंखलता, नशाखोरी और पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली गतिविधियां इस उत्सव की आत्मा के विपरीत हैं। हमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करना चाहिए, जल की बचत करनी चाहिए और मर्यादा का पालन करना चाहिए। तभी यह पर्व अपने वास्तविक स्वरूप में फलित होगा।

अंततः होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि जीवन की पूर्णता का उत्सव है। यह हमें प्रकृति के साथ तालमेल, समाज के साथ सामंजस्य और आत्मा के साथ संतुलन सिखाती है। यदि हम इसे स्नेह, श्रद्धा और समभाव के साथ मनाएं, तो यह हमारे जीवन में स्थायी आनंद का संचार कर सकती है। रंगों की यह छटा हमें याद दिलाती है कि जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए इसे प्रेम और उल्लास से जीना चाहिए। जब मन में समभाव का रंग चढ़ जाता है, तब हर दिन होली बन जाता है। यही इस उत्सव की सार्थकता है—जीवन की उमंग में समरसता का रंग घोल देना, ताकि समाज में सद्भाव, प्रेम और एकता की सुगंध सदैव बनी रहे।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

श्मशान घाट पर रुकी मुखाग्नि, पुलिस ने कब्ज़े में लिया शव: कोटा में विवाहिता की मौत पर उठे गंभीर सवाल

जीएनएस)। कोटा। राजस्थान के कोटा शहर में उस समय सनसनी फैल गई जब एक विवाहिता के अंतिम संस्कार की तैयारी के बीच पुलिस ने हस्तक्षेप कर शव को अपने कब्जे में ले लिया। मामला गुमानपुरा थाना क्षेत्र के छावनी रामचंद्रपुरा इलाके का है, जहां 26 वर्षीय प्रतिमा की मौत के बाद ससुराल पक्ष अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूरी करने श्मशान घाट पहुंच चुका था। मुखाग्नि की रस्म शुरू होने ही वाली थी कि तभी मृतका के पिता पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए और दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए अंतिम संस्कार रुकवा दिया। देखते ही देखते श्मशान घाट पर हंगामे की स्थिति बन गई और माहौल तनावपूर्ण हो उठा।

जानकारी के अनुसार, प्रतिमा की शादी करीब छह वर्ष पहले गजराज सिंह से हुई थी। शादी के बाद से वह कोटा में ही अपने ससुराल में रह रही थी। शनिवार को उसकी तबीयत बिगड़ने पर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। ससुराल पक्ष ने परिजनों और पड़ोसियों को बीमारी से मौत की सूचना दी और जल्दबाजी में अंतिम संस्कार की तैयारियां शुरू कर दीं। रविवार को सुबह पति और परिवार के अन्य सदस्य प्रतिमा की अर्थी लेकर श्मशान घाट पहुंचे। परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार की रस्में पूरी की जा रही थीं।

इसी दौरान मृतका के पिता सत्येंद्र सिंह, जो उत्तर प्रदेश से सूचना मिलने पर कोटा पहुंचे थे, पुलिस के साथ श्मशान घाट पर आ गए। उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी बेटी की मौत स्वाभाविक नहीं है, बल्कि उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता था और संभव है कि उसकी हत्या की गई हो। पिता ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि शादी के छह वर्ष बाद भी संतान न होने के कारण ससुराल पक्ष प्रतिमा को मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान करता था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर आए दिन विवाद होते थे। सत्येंद्र सिंह ने आशंका जताई कि बीमारी का बहाना बनाकर उनकी बेटी को रास्ते से हटा दिया गया और अब सच्चाई छिपाने के लिए जल्दबाजी में अंतिम संस्कार किया जा रहा है। पिता की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने तत्काल हस्तक्षेप किया।

गुमानपुरा थानाधिकारी महेश कारवाल ने बताया कि मामला संदिग्ध प्रतीत होने पर शव को श्मशान घाट से ही कब्जे में लेकर एमबीएस अस्पताल की मोर्चरी भिजवाया गया। पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड से करवाया गया है ताकि मौत के वास्तविक कारणों की निष्पक्ष जांच हो सके। पुलिस ने दहेज प्रताड़ना और संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दूसरी ओर, मृतका के पति गजराज सिंह ने अपने ऊपर लगे आरोपों को सिरे से खारिज किया है। उनका कहना है कि प्रतिमा लंबे समय से पेट में गंभीर गांठ की समस्या से जूझ रही थी और उसका इलाज चल रहा था। उन्होंने दावा किया कि डॉक्टरों की देखरेख में उपचार के दौरान ही उसकी मौत हुई है और इसमें किसी तरह की साजिश या प्रताड़ना का सवाल ही नहीं उठता। गजराज का कहना है कि परिवार पहले से ही दुख में डूबा हुआ है और इस तरह के आरोप स्थिति को और जटिल बना रहे हैं।

घटना के बाद इलाके में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि मौत प्राकृतिक थी तो पोस्टमार्टम से स्थिति स्पष्ट हो जाएगी, लेकिन यदि आरोपों में सच्चाई पाई जाती है तो यह एक गंभीर अपराध का मामला बन सकता है। दहेज और पारिवारिक प्रताड़ना से जुड़े मामलों में अक्सर समय रहते शिकायत दर्ज नहीं हो पाती, जिससे जांच और भी जटिल हो जाती है। इस प्रकरण में भी पुलिस को अब प्रतिमा के वैवाहिक जीवन, अस्पताल के रिकॉर्ड, डॉक्टरों के बयान और पड़ोसियों की गवाही के आधार पर सच्चाई तक पहुंचना होगा।

कानूनी जानकारों के अनुसार, विवाहिता की शादी के सात वर्ष के भीतर संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने पर पुलिस को स्वतः संज्ञान लेकर जांच करनी होती है। ऐसे मामलों में पोस्टमार्टम और मजिस्ट्रियल जांच अनिवार्य होती है। यदि दहेज प्रताड़ना या हत्या के प्रमाण मिलते हैं तो आरोपियों के खिलाफ कड़ी धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जा सकता है। वहीं यदि मेडिकल रिपोर्ट बीमारी से मौत की पुष्टि करती है, तो मामला अलग दिशा ले सकता है। फिलहाल कोटा में यह मामला चर्चा का विषय बना हुआ है। एक ओर पिता का दर्द और आरोप हैं, तो दूसरी ओर पति का दावा कि मौत बीमारी से हुई। सच क्या है, इसका खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट और पुलिस जांच के बाद ही हो पाएगा। तब तक यह घटना समाज को एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर रही है कि विवाहिता की असामयिक मौत के मामलों में पारदर्शिता और निष्पक्ष जांच कितनी जरूरी है।

दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे पर 90 मीटर तक खुदाई, टिल्लू उर्फ प्रिंस हत्याकांड में फिर जगी उम्मीद

जीएनएस)। दौसा। साल 2020 में लापता हुए टिल्लू उर्फ प्रिंस के मामले ने एक बार फिर पूरे इलाके को झकझोर दिया है। छह वर्षों से अधर में लटकी इस गुत्थी में सोमवार को उस समय नया मोड़ आया, जब बड़ा गांव क्षेत्र में दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे पर करीब 90 मीटर के दायरे में खुदाई का काम शुरू किया गया। पुलिस की कड़ी निगरानी और तकनीकी विशेषज्ञों की मौजूदगी में मिलिंग मशीन से सड़क की परतें हटाई गईं और गहराई तक जांच की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। इस असाधारण कार्रवाई ने न केवल स्थानीय लोगों को चौंकाया, बल्कि वर्षों से न्याय की प्रतीक्षा कर रहे परिजनों की उम्मीदों को भी फिर से जगा दिया। सुबह से ही खुदाई स्थल पर हलचल बढ़ गई थी। पुलिस ने पहले पूरे क्षेत्र को घेराबंदी कर सुरक्षित किया, फिर चिन्हित स्थानों पर मशीनें लगाई गईं। बताया जा रहा है कि पीपल के एक पेड़ के सामने वाले हिस्से को विशेष रूप से संदिग्ध मानते हुए निशान लगाया गया था। पूर्व में सीपीआर मशीन और अन्य तकनीकी उपकरणों से दो से तीन स्थानों की पहचान की गई थी। उन्हीं बिंदुओं के आधार पर सोमवार को सड़क को काटकर नीचे की मिट्टी तक पहुंचने का प्रयास किया गया। मौके पर दौसा के एडिशनल एसपी योगेंद्र फौजदार और बांदीकुई थाना अधिकारी जहीर अब्बास सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई गई और फॉरेंसिक टीम को भी अलर्ट रखा गया। खुदाई के दौरान एक्सप्रेसवे की पांच में से तीन लेन अस्थायी रूप से बंद करनी पड़ीं,

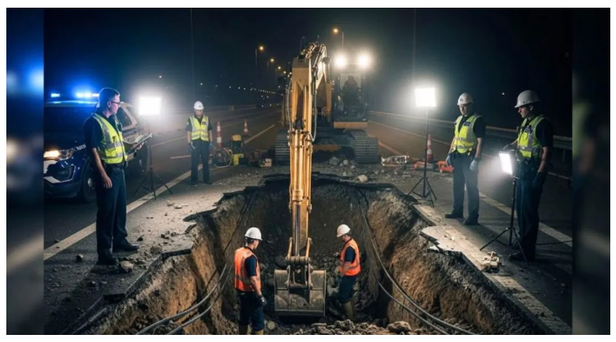

जबकि शेष दो लेनों में नियंत्रित यातायात चलाया गया। भारी वाहनों की गति धीमी कर दी गई और अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो।

टिल्लू उर्फ प्रिंस वर्ष 2020 में संदिग्ध परिस्थितियों में गायब हुआ था। उस समय मामला अपहरण और संभावित हत्या की आशंका के साथ दर्ज हुआ, लेकिन शुरुआती जांच में कोई ठोस सुराग नहीं मिल सका। समय बीतता गया, परिजनों की उम्मीदें टूटती रहीं, मगर उन्होंने बेटे की तलाश नहीं छोड़ी। माता-पिता ने कई बार प्रशासन और पुलिस अधिकारियों से गुहार लगाई कि मामले की दोबारा गहन जांच कराई जाए। उनका आरोप है कि कृष्ण और अनिल नामक व्यक्तियों की भूमिका संदिग्ध रही है और संभव है कि हत्या के बाद शव को जमीन में दबा दिया गया हो। हाल ही में जांच एजेंसियों ने पुराने केस फाइलों की समीक्षा की। ड्रोन सर्वे, सैटेलाइट इमेज और ग्राउंड पेनिट्रेटिंग तकनीक के सहारे कुछ स्थानों को फिर से चिन्हित किया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, पूर्व जांच में जो बिंदु संदिग्ध लगे थे, उन्हें पर्याप्त तकनीकी संसाधनों के अभाव में पूरी तरह नहीं खंगाला जा सका था। अब आधुनिक उपकरणों की मदद से उन स्थानों की वैज्ञानिक तरीके से खुदाई की जा रही है।

खुदाई के दौरान मिट्टी की हर परत को सावधानीपूर्वक हटाया जा रहा है। यदि किसी प्रकार के जैविक अवशेष, कपड़े, धातु या अन्य साक्ष्य मिलते हैं, तो उन्हें तुरंत सील कर फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि अभी तक किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। जांच पूरी होने और रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।

इस बीच, खुदाई स्थल के पास खड़े टिल्लू उर्फ प्रिंस के माता-पिता की आंखों में उम्मीद और भय दोनों झलक रहे थे। मां बार-बार उस स्थान की ओर देखती रहीं जहां मशीनें चल रही थीं। पिता ने कहा कि छह साल से वे हर त्योहार, हर पारिवारिक अवसर बेटे की याद में आंसू बहाते रहे हैं। “हमें बस इतना चाहिए कि अगर हमारा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है, तो कम से कम उसके अवशेष मिल जाएं, ताकि हम अंतिम संस्कार कर सकें,” उन्होंने भावुक होकर कहा।

स्थानीय लोगों में भी इस कार्रवाई को लेकर चर्चा रही। एक्सप्रेसवे जैसी व्यस्त सड़क पर खुदाई होना आम बात नहीं है। कई लोग दूर खड़े होकर पूरे घटनाक्रम को देखते रहे। कुछ ने प्रशासन की पहल की सराहना की, तो कुछ ने सवाल उठाया कि यदि पहले ही गंभीरता से जांच होती, तो शायद मामला इतने वर्षों तक लंबित नहीं रहता।

कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे मामलों में यदि नए साक्ष्य सामने आते हैं तो केस की दिशा पूरी तरह बदल सकती है। यदि खुदाई से कोई ठोस सबूत मिलता है, तो संबंधित आरोपियों के खिलाफ कठोर धाराओं में कार्रवाई संभव है। वहीं यदि कुछ भी नहीं मिलता, तो पुलिस को अन्य संभावित स्थानों और साक्ष्यों की ओर रुख करना होगा।

फिलहाल यह मामला फिर से सुर्खियों में है। छह साल पुरानी इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझाने की कोशिश में प्रशासन ने एक बड़ा कदम उठाया है। अब सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि क्या दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे की यह खुदाई किसी ठोस सच्चाई तक पहुंचा पाएगी, या फिर यह उम्मीद भी अधूरी रह जाएगी। परिजनों के लिए यह केवल एक जांच नहीं, बल्कि वर्षों से चल रही पीड़ा का उत्तर पाने की आखिरी आस है।

दिल्ली के ‘वरदान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल’ में सूरत की डोनेट लाइफ का परचम, दो बड़े पुरस्कार और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

जीएनएस)। सूरत। अंग, शरीर और नेत्रदान के प्रति समाज में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित दुनिया के पहले समर्पित फिल्म महोत्सव ‘वरदान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल’ में सूरत की सामाजिक संस्था डोनेट लाइफ ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर शहर का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। 26 और 27 फरवरी को दिल्ली स्थित गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी में आयोजित इस दो दिवसीय महोत्सव में डोनेट लाइफ की प्रस्तुतियों को न केवल सराहा गया, बल्कि दो प्रमुख श्रेणियों में सम्मानित भी किया गया।

दधीचि देहदान समिति और ‘संप्रेषण’ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस विशेष फिल्म फेस्टिवल का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि अंगदान केवल एक सामाजिक अभियान नहीं, बल्कि मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। उन्होंने ‘वरदान’ जैसे मंचों को समाज में सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार की रचनात्मक पहलें लोगों की सोच में बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाएंगी। फेस्टिवल में सूरत की डोनेट लाइफ संस्था द्वारा निर्मित सच्ची घटना पर आधारित संवेदनशील शॉर्ट फिल्म ‘काया – द मिशन ऑफ लाइफ’ को बेस्ट शॉर्ट फिल्म का पुरस्कार प्रदान किया गया। यह फिल्म अंगदान के भावनात्मक और मानवीय पक्ष को गहराई से प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन और मृत्यु के बीच उम्मीद की किरण को दर्शाया गया है। इसके अलावा संस्था के म्यूजिक वीडियो ‘अंगदान कर ले रे मानव, तू ईश्वर बन

जाएगा’ को फर्स्ट रनर-अप घोषित किया गया। इस गीत के माध्यम से अंगदान के संदेश को सरल, भावनात्मक और प्रेरक अंदाज में लोगों तक पहुंचाया गया है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने डोनेट लाइफ के संस्थापक नीलेश मंडलेवाला की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने अंगदान आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने भी उन्हें सम्मानित किया और उनके प्रयासों को प्रेरणादायक बताया। दधीचि देहदान समिति के संस्थापक आलोक कुमार ने कहा कि नीलेश मंडलेवाला का कार्य समाज के लिए एक मिसाल है और उनका समर्पण अंगदान अभियान को नई दिशा दे रहा है।

फेस्टिवल के दौरान नीलेश मंडलेवाला को अंगदान के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए ‘सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर’ प्रदान किया गया। यह सम्मान केवल एक संस्था की उपलब्धि नहीं, बल्कि उस विचारधारा की जीत है, जो मानती है कि मृत्यु के बाद भी जीवन को आगे बढ़ाया जा सकता है। डोनेट लाइफ ने इस महोत्सव में शॉर्ट फिल्म, मोटिवेशनल फिल्म, रील और म्यूजिक वीडियो जैसी विभिन्न श्रेणियों में भाग लिया और हर प्रस्तुति के माध्यम से यही संदेश दिया कि “अंगदान ही जीवनदान है।”

दो दिनों तक चले इस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों की जानी-मानी हस्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह-प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर, फिल्म अभिनेता मनोज जोशी, सांसद मनोज तिवारी, हृदय प्रत्यारोपण सर्जन डॉ. अनिल अग्रवाल और वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और अंगदान जागरूकता के इस अनूठे प्रयास की सराहना की।

डोनेट लाइफ संस्था पिछले कई वर्षों से अंग, शरीर और नेत्रदान के लिए समाज को प्रेरित करने का कार्य कर रही है। फिल्म और संगीत जैसे रचनात्मक माध्यमों के जरिए संस्था ने इस संवेदनशील विषय को भावनात्मक स्पर्श दिया है, जिससे लोग केवल जानकारी ही नहीं, बल्कि प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं। संस्था का मानना है कि जब तक लोगों की सोच नहीं बदलेगी, तब तक अंगदान की संख्या में अपेक्षित वृद्धि संभव नहीं है। यही कारण है कि उन्होंने सामाजिक संदेश को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने की रणनीति अपनाई।

‘वरदान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल’ को अंगदान जागरूकता के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल माना जा रहा है। यह महोत्सव न केवल फिल्मकारों के लिए मंच बना, बल्कि समाज को यह समझाने का माध्यम भी बना कि किसी की मृत्यु के बाद उसके अंग कई लोगों को नया जीवन दे सकते हैं। सूरत की डोनेट लाइफ की दोहरी सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि समर्पण, संवेदनशीलता और रचनात्मकता के संगम से सामाजिक बदलाव की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

यह उपलब्धि सूरत शहर के लिए गर्व का विषय है और अंगदान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर नई ऊर्जा देने वाली साबित हो रही है।

सेवा और खेल का संगम: सूरत न्यू सिविल हॉस्पिटल में ‘होली स्पेशल कप’ का उत्साह, नर्सिंग टीम बनी चैंपियन

जीएनएस)। सूरत,। रंगों के पर्व होली के अवसर पर सूरत के New Civil Hospital Surat परिसर में इस वर्ष एक अलग ही रंग देखने को मिला। जहां आमतौर पर अस्पताल का वातावरण गंभीरता, आपातकालीन सेवाओं और निरंतर भागदौड़ से भरा रहता है, वहीं इस बार मैदान पर गूंजती तालियों, चौकों-छक्कों और हौसला-अफजाई की आवाजों ने माहौल को जीवंत बना दिया। ‘होली स्पेशल कप’ क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन न केवल एक खेल प्रतियोगिता था, बल्कि यह भाईचारे, टीमवर्क और तनाव मुक्ति का उत्सव बन गया।

अस्पताल प्रशासन और कर्मचारियों की पहल पर आयोजित इस दो दिवसीय टूर्नामेंट का उद्देश्य था—विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना और लगातार ड्यूटी के दबाव के बीच कर्मचारियों को मानसिक राहत प्रदान करना। चिकित्सा सेवाओं में कार्यरत डॉक्टर, नर्स, तकनीकी स्टाफ और प्रशासनिक कर्मचारी अक्सर 24 घंटे की जिम्मेदारी निभाते हैं। गंभीर मरीजों की देखभाल, आपातकालीन स्थितियों से निपटना और सीमित संसाधनों में बेहतर सेवा देना उनके दैनिक कार्य का हिस्सा है। ऐसे में यह खेल आयोजन उनके लिए ऊर्जा का स्रोत और आपसी जुड़ाव का अवसर बन गया।

टूर्नामेंट में कुल 12 विभागों की टीमों ने हिस्सा लिया। PIU, RMO ऑफिस, सेनेटरी इंस्पेक्टर विभाग, इलेक्ट्रिक विभाग, रेडियोलॉजी, मेडिकल कॉलेज, मेडिकल टीम और नर्सिंग टीम सहित अन्य विभागों ने पूरे उत्साह के साथ मैदान में उतरकर प्रतिस्पर्धा की। हर टीम ने अपने विभाग का प्रतिनिधित्व गर्व और जोश के साथ किया। मैचों के दौरान खिलाड़ियों का उत्साह देखते ही बनता था। ड्यूटी के बीच समय निकालकर अभ्यास करना और फिर पूरे जोश के साथ खेलना, यह दर्शाता है कि खेल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कितनी गहरी थी। पहले दिन लीग मुकाबलों में कई रोमांचक क्षण देखने को मिले। कुछ मैच आखिरी ओवर तक खिंचे, तो कुछ में शानदार बल्लेबाजी ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। गेंदबाजों ने भी बेहतरीन लाइन और लेंथ के साथ बल्लेबाजों को चुनौती दी। फील्डिंग के दौरान शानदार कैच और रन-आउट ने मैचों को और रोचक बना दिया। अस्पताल के कर्मचारी ही दर्शक भी थे और समर्थक भी, जो अपने-अपने विभाग की टीम का उत्साह बढ़ा रहे थे। फाइनल मुकाबला नर्सिंग टीम और मेडिकल कॉलेज की टीम के बीच खेला गया। यह मैच टूर्नामेंट का सबसे रोमांचक और यादगार क्षण साबित हुआ।

नर्सिंग टीम ने संतुलित और रणनीतिक खेल का परिचय देते हुए पहले गेंदबाजी में विपक्षी टीम को सीमित स्कोर पर रोका। इसके बाद बल्लेबाजी में संयम और आक्रामकता का संतुलन दिखाते हुए लक्ष्य हासिल कर लिया। मेडिकल कॉलेज की टीम ने कड़ी टक्कर दी और अंत तक मुकाबले को जीवंत बनाए रखा, लेकिन अंततः नर्सिंग टीम ने जीत का परचम लहराते हुए ‘होली स्पेशल कप’ की ट्रॉफी अपने नाम कर ली।

विजेता टीम को नर्सिंग काउंसिल के वाइस प्रेसिडेंट इकबाल कड़ीवाला के हाथों ट्रॉफी प्रदान की गई। पुरस्कार वितरण समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ, जिसमें वीरेन पटेल, प्रमोद पटेल, कर्णिकभाई पटेल और संजय परमार की विशेष उपस्थिति रही। सभी अतिथियों ने खिलाड़ियों की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन अस्पताल परिवार में नई ऊर्जा और एकजुटता का संचार करते हैं।

टूर्नामेंट के सफल संचालन का श्रेय आयोजन समिति के राजू पटेल, लोकेश सिंह और शिवराज सिंह को दिया गया। ड्यूटी शेड्यूल को प्रभावित किए बिना मैचों का समय निर्धारण करना और पूरे आयोजन को अनुशासित ढंग से संपन्न कराना अपने आप में एक चुनौती थी, जिसे उन्होंने कुशलतापूर्वक निभाया।

इस आयोजन का महत्व केवल खेल तक सीमित नहीं था। यह एक संदेश भी था कि कठिन और जिम्मेदार कार्यक्षेत्र में भी आपसी सहयोग और सकारात्मक माहौल बनाए रखा जा सकता है। अस्पताल जैसे संवेदनशील वातावरण में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए मानसिक संतुलन और शारीरिक फिटनेस अत्यंत आवश्यक है। खेल गतिविधियां न केवल तनाव कम करती हैं, बल्कि टीम भावना को भी मजबूत बनाती हैं। जब एक नर्स, डॉक्टर या तकनीशियन मैदान पर साथ खेलता है, तो उनके बीच विश्वास और समझ का रिश्ता और गहरा होता है, जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके पेशेवर कार्य में भी दिखाई देता है। नर्सिंग टीम की जीत ने यह भी दर्शाया कि अनुशासन, समर्पण और तालमेल से किसी भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। खिलाड़ियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस टूर्नामेंट ने उन्हें नई ऊर्जा दी है और वे आने वाले समय में भी ऐसे आयोजनों की अपेक्षा रखते हैं।

होली के अवसर पर आयोजित ‘होली स्पेशल कप’ ने यह सिद्ध कर दिया कि रंगों का यह त्योहार केवल पारंपरिक उत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह रिश्तों में भी नए रंग भरने का अवसर देता है। सूरत न्यू सिविल हॉस्पिटल में आयोजित यह टूर्नामेंट आने वाले वर्षों में एक परंपरा का रूप ले सकता है, जो अस्पताल परिवार को और अधिक सशक्त, संगठित और उत्साही बनाए रखेगा।

अंततः यह आयोजन इस बात का प्रतीक बन गया कि सेवा, संवेदनशीलता और समर्पण के बीच भी मुस्कान और उत्साह के लिए स्थान होना चाहिए। मैदान पर गूंजती तालियां और खिलाड़ियों के चेहरों पर झलकती खुशी यह संदेश दे रही थी कि जब साथ मिलकर खेला जाए, तो जीत केवल ट्रॉफी की नहीं, बल्कि रिश्तों और आत्मविश्वास की भी होती है।

Semicon 2.0 के तहत भारत ने 4 वर्षों में 85,000 सेमीकंडक्टर इंजीनियर तैयार किए; 500 विश्वविद्यालयों तक विस्तार का लक्ष्य

जीएनएस)। असम से गुजरात और कश्मीर से कन्याकुमारी तक देशभर के विश्वविद्यालयों के छात्र सेमीकंडक्टर डिजाइन में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। भारत सरकार के सेमीकंडक्टर मिशन के अंतर्गत प्रतिभा विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि भारत ने सेमीकंडक्टर डिजाइन में 85,000 इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने का 10 वर्षों का लक्ष्य मात्र 4 वर्षों में ही प्राप्त कर लिया है।

मंत्री ने बताया कि देश के 315 विश्वविद्यालयों में विश्व के अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक डिजाइन ऑटोमेशन (EDA) टूल्स—Cadence, Synopsys और Siemens—उपलब्ध कराए गए हैं। इन टूल्स की सहायता से छात्र वास्तविक सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन कर रहे हैं। इन चिप्स का निर्माण और परीक्षण Semiconductor Laboratory (SCL) Mohali में किया जा रहा है, जिससे छात्रों को डिजाइन से लेकर निर्माण और वैलिडेशन तक की संपूर्ण प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो रहा है।

उन्होंने कहा कि आज देशभर में असम से गुजरात और कश्मीर से कन्याकुमारी तक विश्वविद्यालयों के छात्र सक्रिय रूप से सेमीकंडक्टर डिजाइन में भाग ले रहे हैं। यह भारत की तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मंत्री ने वैश्विक उद्योग की आवश्यकताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर उद्योग के वर्तमान आकार के 800–900 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने पर लगभग 20 लाख कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होगी। यह भारत के युवाओं के लिए रोजगार के विशाल अवसर प्रस्तुत करता है।

उन्होंने आगे घोषणा की कि Semicon 2.0 के तहत इस कार्यक्रम का विस्तार करते हुए 315 विश्वविद्यालयों की संख्या को बढ़ाकर 500 विश्वविद्यालयों तक किया जाएगा। इससे देश के प्रत्येक राज्य में सेमीकंडक्टर डिजाइन, निर्माण, परीक्षण और वैलिडेशन में प्रशिक्षित प्रतिभाओं का एक मजबूत और निरंतर आधार विकसित होगा।

मंत्री ने कहा कि भारत सरकार सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक मजबूत और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। Semicon 2.0 के अंतर्गत प्रतिभा विकास, बुनियादी ढांचे के निर्माण और उद्योग सहयोग के माध्यम से भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर केंद्र के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में होली पर्व उत्सव में सहभागी होकर होली के दर्शन किए

मुख्यमंत्री ने मेमनगर के मानव मंदिर में वैदिक होली के दर्शन-परिक्रमा कर राज्य के नागरिकों के सुख, समृद्धि एवं सर्वांगीण विकास के लिए प्रार्थना की

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमवार को होली के पवित्र पर्व के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के मेमनगर क्षेत्र में आयोजित होली दर्शन कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होकर नागरिकों के साथ पर्व को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया। इस वर्ष मेमनगर में मानव मंदिर में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाली ‘वैदिक होली’ प्रज्ज्वलित की गई। मुख्यमंत्री ने परंपरागत होली पूजन विधि में श्रद्धापूर्वक भाग लिया और प्रज्ज्वलित की गई होली के दर्शन-परिक्रमा कर राज्य के नागरिकों के सुख, समृद्धि एवं सर्वांगीण विकास के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि होली का यह पवित्र पर्व असत्य पर सत्य

की विजय एवं रंगों का पर्व है। यह त्योहार हम सबके जीवन में राग-द्वेष भूलकर एक-दूसरे से स्नेह से मिलने का और सामाजिक समरसता का संदेश देता है। हम सब साथ मिलकर इस रंगोत्सव को इस प्रकार मनाएँ, जिससे पर्यावरण का भी जतन हो। वैदिक होली प्रज्ज्वलित कर यहाँ पर्यावरण के प्रति जो जागृति दर्शाई गई है, वह प्रशंसनीय है।

होली दर्शन के बाद मुख्यमंत्री ने विख्यात मानव मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति की। उन्होंने इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं, भक्तों तथा स्थानीय नगरजनों के साथ शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया।

इस अवसर पर अहमदाबाद महानगर (मनपा) की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांगभाई दाणी, अहमदाबाद मनपा परिवहन सेवा (एएमटीएस) के अध्यक्ष श्री धरमशीभाई देसाई, मनपा पदाधिकारी, स्थानीय पार्षद, अग्रणी, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में शांतिग्राम में श्री स्वामीनारायण गुरुकुल के नूतन भवन का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ

▸▸ गुजरात सेमीकंडक्टर हब द्वारा युवा शक्ति के कौशल एवं ज्ञान से आत्मनिर्भरता की ओर प्रयाण करेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ शिक्षा, संस्कार एवं टेक्नोलॉजी का त्रिवेणी संगम : स्वामीनारायण गुरुकुल द्वारा विकसित भारत के निर्माण को नई दिशा मिलेगी

जीएनएस)। गांधीनगर : नर्मदा नहर तट पर स्थित श्री स्वामीनारायण गुरुकुल शांतिग्राम में सोमवार को भव्य तथा मंगलमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा पूज्य संतों की विशेष उपस्थिति में विभिन्न प्रकल्पों का लोकार्पण किया गया।

समारोह में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से नूतन भवन के प्रवेश द्वार पर शिलालेख का अनावरण तथा नूतन भवन का उद्घाटन किया गया। संतों के चरणों में वंदन के साथ उपस्थित हरिभक्तों और विद्यार्थियों को रंग तथा उमंग के उत्सव होली की शुभकामनाएँ देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि होली समाज में अज्ञान, अनिष्ट एवं अंधकार के विरुद्ध ज्ञान एवं संस्कार की अग्नि प्रज्ज्वलित करने वाला पर्व है। सनातन धर्म संस्कृति की अटल आस्था की हजारों वर्षों की इस ज्योत का प्रकाश समाज में अधिक व्यापक बनाने के लिए विश्व नेता तथा हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में हम सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मना रहे हैं। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा भारत को ज्ञान एवं संस्कार से समृद्ध बनाने की दिशा दी है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में कार्यरत श्री स्वामीनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान भी विद्यार्थियों को समयानुकूल शिक्षा प्रदान करता है। यहाँ विद्यार्थियों को आध्यात्मिक मूल्यों के साथ 21वीं शताब्दी के भारत के लिए आवश्यक साइंस, टेक्नोलॉजी तथा इनोवेशन की नॉलेज मिले, यह वर्तमान समय की मांग है।

उन्होंने कहा कि आज जब विश्व में टेक्नोलॉजी की प्रतिस्पर्धा चल रही है, तब प्रधानमंत्री ने

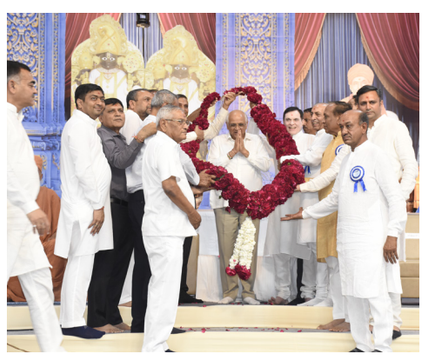

हमारे देश को उसमें अग्रसर तथा सज्ज करने की मंशा रखी है। इसके लिए आगामी युग की टेक्नोलॉजी समान सेमीकंडक्टर सेक्टर में गुजरात को हब बनाने की ऐतिहासिक पहल उनके नेतृत्व में हमने दो दिन पहले साणंद में माइक्रोन के प्लांट के लोकार्पण अवसर पर देखी है। आज गौरवशाली इतिहास लिखा जा रहा है। भविष्य में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में बहुत बड़ी मांग उत्पन्न होने वाली है। उसे पूरा करने हेतु युवाओं के लिए चिप डिजाइन, एआई, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा एडवांस टेक्नोलॉजी का अभ्यास भी अनिवार्य होगा। हाल में लगभग 35 विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी इस चिप डिजाइन का अभ्यास कर रहे हैं। गुजरात में हम आईआईटी-गांधीनगर के साथ समन्वय कर फैब्रिकेशन लैब भी तैयार कर रहे हैं। श्री स्वामीनारायण गुरुकुल राजकोट की यह शांतिग्राम शाखा यदि संस्कार एवं कौशल के समन्वय से सेमीकॉन इंडस्ट्रीज के लिए युवा तैयार करने वाले पाठ्यक्रम शुरू करे, तो इससे उत्तम कार्य और कोई नहीं हो सकता।

श्री पटेल ने कहा कि स्वतंत्रता के उदयकाल में ई. स. 1948 में पूज्य शास्त्रीजी श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी द्वारा स्थापित किया गया यह गुरुकुल आज शिक्षा के साथ संस्कार, अध्यात्म एवं राष्ट्रप्रेम का एक पवित्र तीर्थ बन गया है। एसजीआरएस गुरुकुल की छात्रालय व गुरुकुल परंपरा आज अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ जीवन निर्माण के पाठ भी सिखाती है। ऐसा संस्थान केवल डिग्री धारक ही नहीं, बल्कि संस्कार धारक, सशक्त समाज तथा सक्षम राष्ट्र के आधारस्तंभ समान युवाधन को तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। भगवान स्वामीनारायण के आदर्श अनुशासन, सेवा, सदाचार एवं समर्पण के साथ टेक्नोलॉजी तथा संस्कृति के समन्वय से यह ज्ञान केन्द्र प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करेगा।

केवल सात विद्यार्थियों से शुरू हुई इस शैक्षणिक यात्रा ने अब तक 1.90 लाख से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा व संस्कार दिए हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक परिवारों के बच्चे यहाँ से डॉक्टर, इंजीनियर तथा उच्चाधिकारी बनकर समाज की सेवा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत 2047 का जो संकल्प किया है, उसे साकार करने के लिए उन्होंने डेमोग्राफिक डिविडेंड समान युवा शक्ति के सशक्तिकरण पर ध्यान केन्द्रित किया है। श्री शांतिग्राम स्वामीनारायण गुरुकुल यूथ एम्पावरमेंट के लिए यूपीएससी तथा जीपीएससी जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के कोचिंग सेंटर, सपोर्ट अकादमी तथा अत्याधुनिक हॉस्टल द्वारा अभ्यास की सुविधा प्रदान करता है। आज जो नवनिर्मित भवन बना है, उसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस भवन निर्माण के दाता तो भाग्यशाली हैं ही, परंतु इस भवन को यहाँ आने वाले गरीब एवं मध्यम वर्ग के हर विद्यार्थी पर भी भगवान का आशीर्वाद कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि संस्थान के माध्यम से विद्यार्थियों को भगवान द्वारा इतनी उत्तम सुविधाएँ मिल रही हैं। लेटेस्ट सुविधाओं के साथ निर्मित इस भवन में 4000 विद्यार्थी पढ़ सकते हैं और 1500 विद्यार्थी रह सकते हैं। उन्होंने शुभकामनाएँ दीं कि यहाँ जो भी विद्यार्थी अभ्यास करेगा, उस पर भगवान स्वामीनारायण का आशीर्वाद सदैव रहेगा और वह समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी बनेगा।

वडोदरा मंडल द्वारा होली पर्व के अवसर पर विशेष ट्रेनों का परिचालन , मंडल रेल प्रबंधक राजू भडके ने किया वडोदरा स्टेशन का दौरा

जीएनएस)। होली पर्व के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा वडोदरा रेलवे स्टेशन पर व्यापक व्यवस्थाएँ की गई हैं। विशेष रूप से उत्तर भारत की ओर होली मनाने हेतु यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें चलायी जा रही हैं। व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने हेतु मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ आज वडोदरा स्टेशन का दौरा किया। उन्होंने भीड़ नियंत्रण, यात्री सुविधाओं, टिकट व्यवस्था, स्वच्छता एवं सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा की।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बताया कि नियमित ट्रेनों के अतिरिक्त वडोदरा से गोरखपुर, मऊ एवं जयपुर (खातीपुरा) गंतव्यों के लिए विशेष ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। इन विशेष ट्रेनों के परिचालन से त्योहार के दौरान अतिरिक्त भीड़ का सुव्यवस्थित प्रबंधन किया जा रहा है जिससे यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं समयबद्ध यात्रा सुविधा उपलब्ध होगी। अब तक वडोदरा से इन तीनों विशेष ट्रेनों की कुल 14 यात्राओं (ट्रिप्स) की अधिसूचना जारी की जा चुकी है।

उन्होंने आगे बताया कि पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के अधिकारी वडोदरा स्टेशन पर भीड़ की स्थिति की सतत निगरानी कर रहे हैं। अतिरिक्त स्टाफ की तैनाती, प्रभावी उद्घोषणा व्यवस्था, स्वच्छता पर विशेष ध्यान तथा सुदृढ़ सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित किए गए हैं, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

अहमदाबाद रेल मंडल में "सेवा संकल्प" कार्यक्रम का आयोजन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लिया जनसेवा का संकल्प

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्देशानुसार पारदर्शी, उत्तरदायी एवं नागरिक-केन्द्रित प्रशासन को सुदृढ़ करने की पहल

जीएनएस)। केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अपनाए गए "सेवा संकल्प" के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद रेल मंडल में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के नेतृत्व में मंडल कार्यालय, अहमदाबाद में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारत सरकार की जनसेवा, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

कार्यक्रम में मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा "सेवा संकल्प" की भावना को आत्मसात करते हुए नागरिक-केन्द्रित, पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस अवसर पर कैबिनेट सचिवालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप कार्यसंस्कृति में दक्षता, पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया। अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि भारतीय रेल देश की जीवनरेखा है तथा यात्रियों एवं आम नागरिकों को सुरक्षित, विश्वसनीय एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं

प्रदान करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे जनहित को सर्वोपरि रखते हुए कार्य करें तथा सेवा वितरण प्रणाली में निरंतर सुधार लाते हुए उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर रहें। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य रेलवे सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार सुनिश्चित करना तथा यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं विश्वसनीय सेवाएं प्रदान करने की दिशा में मंडल की प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करना है। "सेवा संकल्प" के माध्यम से अहमदाबाद मंडल सुशासन, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारते हुए जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। रेलवे परिसरों में यात्री एवं श्रमिक सुविधाओं के सुधार हेतु सुझाव

"सेवा संकल्प" की भावना के अनुरूप यात्रियों एवं श्रमिकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए:

जनरल कोच में आवश्यक सुविधाएं

रेलवे स्टेशनों पर पेयजल की सुविधा

गुड्स शेड में कार्यरत श्रमिकों के लिए सुविधाएं

गुड्स शेड में कार्यरत श्रमिकों के लिए निम्नलिखित मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए:

- ▸▸ पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था
- ▸▸ स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता
- ▸▸ पंखे एवं उचित वेंटिलेशन की व्यवस्था

OBHS स्टाफ के लिए आश्रय (Shelter) की व्यवस्था

ऑन बोर्ड हाउसकीपिंग सर्विस (OBHS) स्टाफ के लिए सुरक्षित एवं उचित आश्रय तथा विश्राम की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे बेहतर तरीके से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें।

श्रमिकों को उचित भुगतान सुनिश्चित करने हेतु प्रणाली

यह सुनिश्चित करने के लिए एक पारदर्शी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए कि श्रमिकों को उनका वास्तविक और पूर्ण भुगतान समय पर प्राप्त हो। इसके अंतर्गत:

- ▸▸ डिजिटल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा दिया जाए
- ▸▸ नियमित सत्यापन किया जाए
- ▸▸ शिकायत निवारण तंत्र स्थापित किया जाए

लोडिंग प्रणाली में सुधार

गुड्स शेड में लोडिंग प्रणाली को अधिक सुरक्षित और श्रमिकों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए, विशेषकर गर्मी के मौसम में डिहाइड्रेशन से बचाव हेतु। इसके लिए:

- ▸▸ यांत्रिक लोडिंग/अनलोडिंग को बढ़ावा दिया जाए
- ▸▸ छाया (शेड) की व्यवस्था की जाए
- ▸▸ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए
- ▸▸ अत्यधिक गर्मी के समय कार्य के लिए उचित समय निर्धारण किया जाए

सेवा भावना को सशक्त बनाने की दिशा में भावनगर रेलवे मंडल की महत्वपूर्ण पहल

जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा नागरिक-केंद्रित, उत्तरदायी एवं संवेदनशील प्रशासन को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अंगीकृत "सेवा संकल्प प्रस्ताव" के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में एक महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भावनगर परा स्थित सभा कक्ष में किया गया। बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा सहित मंडल के सभी विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार बैठक के दौरान सेवा संकल्प प्रस्ताव का विधिवत वाचन किया गया तथा इसके उद्देश्यों, कार्यसंस्कृति में अपेक्षित परिवर्तन तथा क्षेत्रीय स्तर पर इसके प्रभावी क्रियान्वयन के उपायों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अधिकारियों ने सेवा भावना, पारदर्शिता, जवाबदेही एवं जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि भारतीय रेल केवल परिवहन सेवा नहीं बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों के जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक व्यवस्था है। ऐसे में यात्रियों एवं आम नागरिकों को प्रदान की जा रही सेवाओं को अधिक प्रभावी, समयबद्ध, संवेदनशील तथा परिणामोन्मुख बनाना प्रत्येक रेल अधिकारी एवं कर्मचारी की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सेवा संकल्प की भावना को दैनिक कार्यप्रणाली में आत्मसात करते हुए उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने का आह्वान किया।

बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों ने रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई जा रही यात्री सुविधाओं एवं प्रशासनिक सेवाओं को और अधिक दक्ष, पारदर्शी एवं जनहितकारी ढंग से लागू करने का सामूहिक संकल्प लिया। साथ ही "नागरिक देवो भव" की भावना के अनुरूप सेवा-उन्मुख कार्य संस्कृति को अपनाते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

यह बैठक भावनगर मंडल में उत्कृष्ट प्रशासनिक कार्यप्रणाली, गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तथा विकसित भारत के राष्ट्रीय संकल्प को गति प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

गुजरात शहरी विकास मिशन को मिलेगा 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड'

अत्याधुनिक कमांड एंड कंट्रोल सेंटर और टेक्नोलॉजी के उपयोग से शहरी विकास ने किया ध्यान आकर्षित

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य के शहरों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए विभिन्न पहलें शुरू की गई हैं। इसके लिए गुजरात शहरी विकास मिशन (जीयूडीएम) बड़े शहरों के साथ-साथ राज्य के नगर पालिका क्षेत्रों में भी आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और उचित आयोजन के जरिए नागरिकों की सुख-सुविधाओं को बेहतर बना रहा है।

शहरी विकास के लिए राज्य सरकार के आयोजन को ध्यान में रखते हुए इंडिया वाटर फाउंडेशन (आईडब्ल्यूएफ) ने गुजरात की 156 नगर पालिकाओं में सीवर नेटवर्क के सफाई व्यवस्था के निरीक्षण के लिए बनाए गए इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के लिए 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड' प्रदान करने की

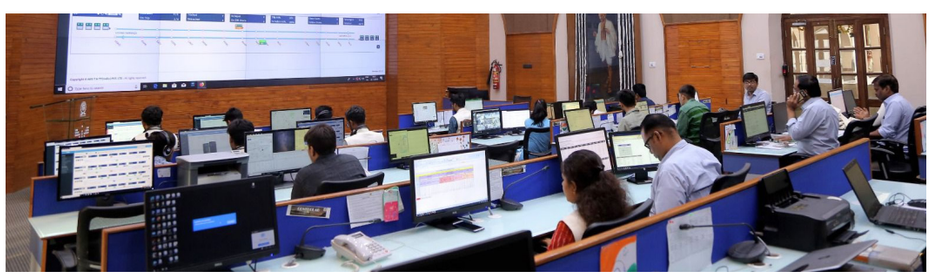

घोषणा की है। राज्य सरकार के शहरी विकास और शहरी गृह निर्माण विभाग मंत्री श्री कनुभाई देसाई के दिशा-निर्देश में अत्याधुनिक इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर का निर्माण कर टेक्नोलॉजी के उपयोग से इस व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाया गया है। राज्य की नगर पालिकाओं में सीवर नेटवर्क का रखरखाव और बेहतर तरीके से हो रहा है और पानी के पुनः उपयोग के कारण लाखों लीटर पानी को बचाने में भी सफलता मिली है। टेक्नोलॉजी के समन्वय से कामकाज का और भी अच्छी तरह से निरीक्षण संभव हो पाया है। इस प्रकार, पर्यावरण के अनुकूल शहरी विकास के विजन को सार्थक बनाया जा रहा है। राज्य सरकार के इस कार्य को ध्यान में लेकर बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट का जूरी अवॉर्ड दिया गया है। इंडिया वाटर फाउंडेशन की ओर से 6 और 7 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित वाटर ट्रांसवर्सैलिटी ग्लोबल अवॉर्ड्स और कॉन्क्लेव 2026 के दौरान जीयूडीएम को 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड' दिया जाएगा।

क्रूड ऑयल वायदा में 510 रुपये की तेजी: सोना वायदा में 6914 रुपये और चांदी वायदा में 13935 रुपये का ऊछाल

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 49235.86 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 139662.27 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 39241.49 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 41670 पॉइंट के स्तर पर

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 188898.88 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 49235.86 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 139662.27 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 41670 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 5030.82 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 39241.49 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 165501 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 169679 रुपये और नीचे में 165217 रुपये पर पहुंचकर, 162104 रुपये के पिछले बंद के सामने 6914 रुपये या 4.27 फीसदी बढ़कर 169018 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 6497 रुपये या 4.94 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 138146 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 782 रुपये या 4.73 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 17328 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी अप्रैल वायदा 162899 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 169842 रुपये और नीचे में 162240 रुपये पर पहुंचकर, 7039 रुपये या 4.34 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 169075 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम 162761 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 172000 रुपये और नीचे में 162761 रुपये पर पहुंचकर, 162274 रुपये के पिछले बंद के सामने 7600 रुपये या 4.68 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 169874 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 282644 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 297799 रुपये और नीचे में 282643 रुपये पर पहुंचकर, 282644 रुपये के पिछले बंद के सामने 13935 रुपये या 4.93 फीसदी की तेजी के संग 296579 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 15816 रुपये या 5.54 फीसदी की तेजी के संग 301553 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 15712 रुपये या 5.5 फीसदी की बढ़त के साथ 301469 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। मेटल वर्ग में 2758.32 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 5.7 रुपये या 0.47 फीसदी की बढ़त के

साथ 1228.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि जस्ता मार्च वायदा 4.7 रुपये या 1.44 फीसदी की मजबूती के साथ 331.25 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 10.7 रुपये या 3.42 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 323.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 60 पैसे या 0.32 फीसदी चढ़कर 190.15 रुपये प्रति किलो हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 7056.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा 6210 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 6733 रुपये और नीचे में 6210 रुपये पर पहुंचकर, 510 रुपये या 8.37 फीसदी की तेजी के संग 6602 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 510 रुपये या 8.37 फीसदी की तेजी के संग 6606 रुपये प्रति बैरल हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा 266.5 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 278.5 रुपये और नीचे में 264.9 रुपये पर पहुंचकर, 262.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 9.2 रुपये या 3.51 फीसदी की तेजी के संग 271.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 9.4 रुपये या 3.58 फीसदी बढ़कर 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मार्च वायदा 957.9 रुपये पर खूलकर, 1.8 रुपये या 0.19 फीसदी की तेजी के संग 956.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 27043.37 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 12198.13 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1806.24 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 490.67 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 16.74 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 444.67 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 5118.20 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1919.82 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9749 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 76160 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26193 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 377391 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 50974 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7448 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 17404 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 59400 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 23336 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27541 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा 41630 पॉइंट पर खूलकर, 41670 के उच्च और 41502 के नीचले स्तर को छूकर, 1189 पॉइंट बढ़कर 41670 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मार्च 6500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 210.4 रुपये की बढ़त के साथ 454.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.15 रुपये की बढ़त के साथ 14.1 रुपये हुआ। सोना मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 567 रुपये की बढ़त के साथ 871 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 400000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 836 रुपये की बढ़त के साथ 3259.5 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.65 रुपये की बढ़त के साथ 15.23 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 57 पैसे की नरमी के साथ 3.24 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मार्च 6500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 252.6 रुपये की गिरावट के साथ 411 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4 रुपये की गिरावट के साथ 16.85 रुपये हुआ। सोना मार्च 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 1531 रुपये की गिरावट के साथ 2339 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 316 रुपये की गिरावट के साथ 1190 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.53 रुपये की गिरावट के साथ 22.59 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 60 पैसे के सुधार के साथ 5.9 रुपये हुआ।